मुद्रक
जीवणजी डाह्याभाई देसाई
नवजीवन मुद्रणालय, अहमदाबाद — १४
प्रकाशक
मगनभाई प्रभुदास देसाई
गुजरात विद्यापीठ, अहमदाबाद — १४

पहली बार, प्रति २०००
दूसरी बार, प्रति ५०००

प्रकाशकका निवेदन

इस पुस्तकके नामसे ही पता चलता है कि यह पुस्तक गुजरातमें हिन्दी सीखनेवालोंको बोलने और लिखनेकी भूलोंसे बचानेके लिए है। भाषाशास्त्रकी दृष्टिसे इसका लाभ गुजरातीके सिवा अन्य भाषा-भाषियोंको भी मिलेगा ऐसा मैं मानता हूँ।

अहिन्दी-भाषी लोग हिन्दीको अपनी भाषाकी तुलनामें ही अच्छी तरहसे और आसानीसे सीख सकते हैं। यह बात बम्बई सरकारके शिक्षातंत्रने भी स्वीकार कर ली है, यह आनंदकी बात है। गुजराती और हिन्दीमें साम्य बहुत है मगर इसके साथ साथ दोनोंमें भेद भी है। वाचकोंको मैं यहाँ पर हमारी पिछली किताब 'हिन्दुस्तानी व्याकरण प्रवेश' की याद दिलाना चाहता हूँ। उसकी रचना भी ऊपरके सिद्धान्तोंको लेकर ही की गई थी। गुजरातीकी तुलनामें हिन्दीके भेदको समझानेके लिए उसमें भरसक चेष्टा की गई है। इस पुस्तकमें इस विचारको आगे बढ़ाया गया है और हिन्दी तथा गुजराती दोनों भाषाओंका भेद और उससे कारण होनेवाली आये दिनकी भूलोंको बताया गया है। इस कारण, एक तरहसे यह पुस्तक 'हिन्दुस्तानी व्याकरण प्रवेश' का आगेका भाग है ऐसा हम मान सकते हैं। भूल-सुधारका काम बहुत बड़ा है और यह पुस्तिका बहुत सामान्य भूलोंको समझाती है। इस ढंगसे आगे भी काम करना रहता है जिसे बढ़ानेका विचार है।

यह पुस्तक हिन्दी सीखनेवालोंके लिए, चाहे वे विद्यार्थी हों या प्रौढ़, उपयोगी साबित होगी। राष्ट्रके संविधानने आज्ञा दी है (देखिये धारा ३५१) कि हमारे देशको पूरा काम दे सके ऐसी आंतरभाषा हिन्दीको तरक्की करनी हो, तो इसके लिए देशकी सब भाषाओंसे

उसकी मदद करनी होगी। हमारी आंतरभाषा उत्तर हिंदकी प्रदेशभाषा हिन्दी तक न तो सीमित होती है, न व्यापक होती है। उसको विशाल और सर्वग्राही व्याख्या संविधानने दी है। उसको यदि प्रकट करना है तो हिन्दकी सब भाषाओंके शिक्षकों और विद्वानोंको चाहिये कि वे भाषाओंका तुलनात्मक अभ्यास करने लगें और इसके द्वारा अपने अपने प्रदेशमें आंतरभाषाके ठोस अभ्यासके लिए साहित्य पैदा करें।

गूजरात विद्यापीठ मानता है कि देशकी आंतरभाषा हिन्दी-हिन्दुस्तानी हमारे शिक्षाक्रममें अभ्यासका एक अनिवार्य विषय होना चाहिये, शिक्षाका माध्यम नहीं; वह स्थान तो हरएककी स्वभाषा या प्रदेशभाषाका है। इस कारण विद्यापीठ गुजरातमें हिंदीकी शिक्षाकी अभिवृद्धिके लिए शुरूसे प्रयत्न करता आया है। इसके लिए वह पुस्तकोंका प्रकाशन भी करता है। यह किताब इसी सिलसिलेमें प्रकट होती है। आज तक जो किताबें प्रकट की गई हैं, उनकी फेहरिस्त इस पुस्तकके आरंभ और अन्तमें दी गई है। उसकी तरफ मैं वाचकोंका ध्यान खींचता हूँ। आशा है इस किताबसे हिंदी-प्रचारको और मदद मिलेगी।

ता० ६-८-'५५

इस पुस्तकके बारेमें

हिन्दी शिक्षक सनद और सत्सेवक समाज सेवक महाविद्यालयके विद्यार्थियोंकी हिन्दीकी उत्तर-पुस्तकें जाँचनेसे महसूस हुआ कि एक ऐसी पुस्तक तैयार की जाय कि जिससे अ-हिन्दी भाषियोंको हिन्दी लिखनेमें सहायता मिले। उत्तर-पुस्तकोंको जाँचनेमें जिस जिस तरहकी भूलें हमारे अनुभवमें आईं उनको ध्यानमें रखकर इस पुस्तककी रचना की गई है। और अशुद्ध शब्द और वाक्य जो इस पुस्तकमें दिये गये हैं वे मनगढ़न्त नहीं हैं, बल्कि ये सब भूलें विद्यार्थियोंसे हुई हैं।

विशेषार्थी शब्द, पशु-पक्षियोंकी बोलीके शब्द, और मुहावरे व कहावतें ये सब ऐसी जरूरी चीजें हैं कि जिनकी जानकारीसे हिन्दी लिखनेमें मदद मिलती है, इन सबको पुस्तकके अंतमें परिशिष्टके रूपमें दे दिया गया है।

यह पुस्तक व्याकरणकी पुस्तकका काम नहीं करती, हाँ, भूलोंके कारण समझाने और उनसे बचनेके लिए व्याकरणके मोटे मोटे नियम जरूर जगह जगह दिये गये हैं। मगर इससे कोई यह न समझ ले कि व्याकरणके अलग अभ्यासकी जरूरत नहीं है। यह पुस्तक उन लोगोंके लिए अधिक मददरूप होगी जिन्हें व्याकरणका ज्ञान है।

इस पुस्तकके तैयार करनेमें एक दो प्रचारक भाइयोंने भारी मदद की है। उनका हम आभार मानते हैं। इस पुस्तकको अधिक उपयोगी बनानेके लिए पाठक अगर सुझाव देंगे तो हम उनके आभारी होंगे।

गूजरात विद्यापीठ
अहमदाबाद

गिरिराजकिशोर
अम्बाशंकर नागर

उसकी मदद करनी होगी। हमारी आंतरभाषा उत्तर हिंदकी प्रदेशभाषा हिन्दी तक न तो सीमित होती है, न व्याख्यात होती है। उसकी विशाल और सर्वग्राही व्याख्या संविधानने दी है। उसको यदि प्रकट करना है तो हिन्दकी सब भाषाओंके शिक्षकों और विद्वानोंको चाहिये कि वे भाषाओंका तुलनात्मक अभ्यास करने लगे और इसके द्वारा अपने अपने प्रदेशमें आंतरभाषाके ठोस अभ्यासके लिए साहित्य पैदा करें।

गूजरात विद्यापीठ मानता है कि देशकी आंतरभाषा हिन्दी-हिन्दुस्तानी हमारे शिक्षाक्रममें अभ्यासका एक अनिवार्य विषय होना चाहिये, शिक्षाका माध्यम नहीं; वह स्थान तो हरएककी स्वभाषा या प्रदेशभाषाका है। इस कारण विद्यापीठ गुजरातमें हिंदीकी शिक्षाकी अभिवृद्धिके लिए शुरूसे प्रयत्न करता आया है। इसके लिए वह पुस्तकोंका प्रकाशन भी करता है। यह किताब इसी सिलसिलेमें प्रकट होती है। आज तक जो किताबें प्रकट की गई हैं, उनकी फेहरिस्त इस पुस्तकके आरंभ और अन्तमें दी गई है। उसकी तरफ मैं वाचकोंका ध्यान खींचता हूँ। आशा है इस किताबसे हिंदी-प्रचारको और मदद मिलेगी।

ता० ६–८–'५५

इस पुस्तकके बारेमें

हिन्दी शिक्षक सनद और महादेव समाज सेवक महाविद्यालयके विद्यार्थियोंकी हिन्दीकी उत्तर-पुस्तकें जाँचनेसे महसूस हुआ कि एक ऐसी पुस्तक तैयार की जाय कि जिससे अ-हिन्दी भाषियोंको हिन्दी लिखनेमें सहायता मिले। उत्तर-पुस्तकोंको जाँचनेसे जिस जिस तरहकी भूलें हमारे अनुभवमें आईं उनको खयालमें रखकर इस पुस्तककी रचना की गई है। और अशुद्ध शब्द और वाक्य जो इस पुस्तकमें दिये गये हैं वे मनगढ़न्त नहीं हैं, बल्कि ये सब भूलें विद्यार्थियोंसे हुई हैं।

विरोधार्थी शब्द, पशु-पक्षियोंकी बोलीके शब्द, और मुहावरे व कहावतें ये सब ऐसी जरूरी चीजें हैं कि जिनकी जानकारीसे हिन्दी लिखनेमें मदद मिलती है, इन सबको पुस्तकके अन्तमें परिशिष्टके रूपमें दे दिया गया है।

यह पुस्तक व्याकरणकी पुस्तकका काम नहीं करती, हाँ, भूलोंके कारण समझाने और उनसे बचनेके लिए व्याकरणके मोटे मोटे नियम जरूर जगह जगह दिये गये हैं। मगर इससे कोई यह न समझ ले कि व्याकरणके अलग अभ्यासकी जरूरत नहीं है। यह पुस्तक उन लोगोंके लिए अधिक मददरूप होगी जिन्हें व्याकरणका ज्ञान है।

इस पुस्तकको तैयार करनेमें एक दो प्रचारक भाइयोंने भारी मदद की है। उनका हम आभार मानते हैं। इस पुस्तकको अधिक उपयोगी बनानेके लिए पाठक अगर सुझाव देंगे तो हम उनके आभारी होंगे।

गुजरात विद्यापीठ
अहमदाबाद

गिरिराजकिशोर
अम्बाशंकर नागर

अनुक्रमणिका

विषय-प्रवेश

जब हम कोई नई भाषा सीखते हैं तो उसमें भूलें होती ही हैं। विचार कर देखा जाय तो इन भूलोंका मूल कारण हमारी मातृभाषा और उस नई भाषाकी समानता और भिन्नता ही है।

समानताके कारण भी भूलें होती हैं, यह बात आसानीसे समझमें नहीं आती। पर थोड़ा विचार करनेसे यह बात स्पष्ट हो जायगी। गुजराती और हिन्दीमें लिपि, शब्दभंडार और वाक्यरचना आदिमें इतना अधिक साम्य है कि विद्यार्थीको कभी कभी तो यह ध्यान ही नहीं रहता कि वह एक नई भाषा लिख-पढ़ रहा है। परिणामस्वरूप नागरी लिपिमें गुजराती लिपिके અ, ક, ખ, જ, બ आदि अक्षरोंका प्रयोग करते समय उसे अपनी भूलका पता नहीं चलता।

इसी प्रकार शब्दभंडारकी समानताके कारण विद्यार्थी गुजरातीमें प्रचलित शब्दोंका ज्योंका त्यों हिन्दीमें प्रयोग कर देते हैं। जैसे कि मेहमान, बहिन आदि शब्दोंका गुजराती रूप महेमान, बहेन आदि लिख देते हैं।

इसी प्रकार वाक्यरचनामें भी गुजराती और हिन्दीमें काफी समानता है। पहले कर्ता, फिर कर्म और अन्तमें क्रियापद, सामान्य नियम यही है। पर इस समानतामें कहाँ भिन्नता है, यह हमें देखना और समझना चाहिए।

भूलोंसे बचनेका एकमात्र उपाय यही है कि हम अपनी भाषा और राष्ट्रभाषाके बीचकी समानता और भिन्नताको जहाँ तक हो सके अच्छी तरह समझ लें। सुगमताकी दृष्टिसे राष्ट्रभाषा सीखनेवाले विद्यार्थियोंकी भूलोंको नीचे दिये गये आठ भागोंमें बाँट सकते हैं :—

१. लिपिकी भूलें
२. उच्चारणकी भूलें
३. हिज्जेकी भूलें
४. लिंगकी भूलें
५. वचनकी भूलें
६ क्रियाकी भूलें
७ वाक्यरचनाकी भूलें
८ अर्थभेदके कारण होनेवाली भूलें

इस पुस्तिकामें विद्यार्थियोंकी आये दिन होनेवाली भूलोंको इस प्रकार बताये हुए भागोंमें समझानेकी कोशिश करेंगे।

१
लिपिकी भूलें

हिन्दी भाषाकी लिपि देवनागरी है। यह लिपि गुजराती लिपिसे काफी मिलती-जुलती है, पर गुजराती और देवनागरीके कुछ अक्षरोंमें थोड़ा फर्क है। विद्यार्थियोंको ऐसे अक्षरोंकी लिखावट पर विशेष ध्यान देना चाहिए और हिन्दी लिखते समय इनके गुजराती रूपोंको छोड़कर देवनागरी रूपोंको ही काममें लेना चाहिए।

जो स्वर और व्यंजन गुजराती और हिन्दीमें एकसे नहीं हैं, उनके गुजराती और हिन्दी रूप नीचे दिये गये हैं, जिससे पाठक दोनोंका भेद समझ जायें।

स्वर :—

गुजराती	हिन्दी	गुजराती	हिन्दी
અ	अ (अ)	એ	ए
આ	आ (आ)	ઐ	ऐ
ઇ	इ	ઓ	ओ
ઈ	ई	ઔ	औ
ઉ	उ	અં	अं
ઊ	ऊ	અઃ	अः

स्वरोंकी मात्राएँ दोनों भाषाओंमें एकसी हैं।

प्रायः देखा जाता है कि भाषा सीखते समय लोग उच्चारण पर विशेष ध्यान नहीं देते। पर सच पूछा जाय तो भाषाकी शुद्धि उच्चारणकी शुद्धि पर ही निर्भर रहती है। अगर हम सही बोलते हैं तो लिखते भी सही। हिन्दीकी सबसे बड़ी विशेषता यही है कि उसमें जैसा बोला जाता है वैसा ही लिखा भी जाता है। इसलिए यदि उच्चारण पर काबू पा लिया जाय, तो हिज्जेकी भूलोंसे हमें आसानीसे मुक्ति मिल जाती है।

उच्चारण-दोष और उनके कारण होनेवाली सामान्य भूलें:—

(१) ज्ञ

संयुक्त व्यंजन 'ज्ञ' का उच्चारण हिन्दीमें 'ग्य' होता है।

(२) श, ष, स

हिन्दी और गुजराती दोनोंमें 'स' की ये तीन ध्वनियाँ प्रचलित हैं। पहला 'श' तालव्य, दूसरा 'ष' मूर्धन्य और तीसरा 'स' दंत्य कहलाता है।

इन तीनोंके सही उच्चारणका भेद पाठक अच्छी तरहसे जान सकें, इसलिए कुछ शब्द नीचे दिये जाते हैं —

(i) तालव्य 'श' के शब्द — शरबत, शहनाई, शादी, शान, शील, शीशा, शुभ्र, शुद्ध, शर, शोभा, शोला।

(ii) मूर्धन्य 'ष' के शब्द — षट्, षड्यंत्र, ईर्षा, दोष, दृष्टि, धनुष, मनुष्य, वर्षा।

(iii) दंत्य 'स' के शब्द — सब, सयाने, सरकार, सर्दी, समस्या, साफ, सील, सोमवार।

(३) अनुस्वार और चन्द्रबिन्दु

पूर्ण अनुस्वार	अर्ध-अनुस्वार
अंग	आँत
गंध	गाँव
तंतु	ताँत
दंभ	दाँत
पंच	पाँच
हंस	हँसी

ऊपर दिये गए उदाहरणोंमें अंग, दंभ, पंच इत्यादिमें जिस चिह्न (ं) का प्रयोग किया गया है उसे अनुस्वार कहते हैं, और आँत, दाँत, पाँच इत्यादिमें जिस चिह्न (ँ) का प्रयोग हुआ है उसे चन्द्रबिन्दु कहते हैं।

अनुस्वार नाकसे बोला जाता है, इसलिए उसे अनुनासिक भी कहते हैं। जब अनुस्वारका पूर्ण रूपसे तानकर उच्चार होता है तब उसे पूर्ण अनुस्वार कहते हैं और उसे बतानेके लिए यह (ं) चिह्न लगाते हैं। परन्तु जहाँ कुछ भी तानना नहीं पडता वहाँ यह (ँ) चिह्न लगाते हैं, जिसे अर्धानुस्वार या चन्द्रबिंदु कहते हैं।

हिन्दीमें पूर्ण अनुस्वार ङ्, ञ्, ण्, न् और म् इन अनुनासिक पंचमवर्णोंकी सहायतासे भी लिखा जाता है। इनमें से प्रत्येक अपने वर्गके अक्षरोंके साथ संयुक्त वर्णके रूपमें प्रयुक्त होता है:—

क ख ग घ . . . . . के साथ . . . . . . ङ
च छ ज झ . . . . . " " . . . . . ञ
ट ठ ड ढ . . . . . " " . . . . . . ण
त थ द ध . . . . . " " . . . . . . न
प फ ब भ . . . . . " " . . . . . म

नोट:—केवल ऊपर दिये गये वर्गोंमें ही अनुस्वार संयुक्त वर्णके रूपमें लिखा जाता है, बाकीमें नहीं।

पूर्ण अनुस्वार दो तरहसे लिखा जाता है। उसके लिखनेकी दोनों रीतें नीचे दी जाती हैं :—

वर्णके अंतिम अनुनासिक वर्णके साथ		अनुस्वारके चिह्नके साथ
शङ्कर शङ्ख	ङ्	शंकर शंख
अञ्जन चञ्चल	ञ्	अंजन चंचल
घण्टा डण्डा	ण्	घंटा डंडा
चन्दन सन्त	न्	चंदन संत
दम्भ पम्प	म्	दंभ पंप

अर्धानुस्वारका उच्चारण पूरे अनुस्वारकी अपेक्षा कोमल और हलका होता है। इसे पूरे अनुस्वारकी भाँति अनुनासिक वर्णके साथ नहीं लिखा जा सकता। उदाहरणके लिए 'अंत' को हम 'अन्त' लिख सकते हैं, पर 'आँख' को 'आन्ख' नहीं लिख सकते। अतएव जहाँ अनुस्वारका उच्चारण कोमल हो और जिसे ङ्, ञ्, ण्, न् और म् आदि अनुनासिक संयुक्त वर्णोंसे न लिखा जा सके वहाँ अर्धानुस्वार समझना चाहिए और उसे चन्द्रबिन्दुके साथ लिखना चाहिए।

गुजरातीमें जो भेद अनुस्वार और पोचे अनुस्वारमें है, हिन्दीमें वही भेद अनुस्वार और अर्धानुस्वारमें है। पर गुजरातीमें पोचा अनुस्वार भी अनुस्वारके चिह्न (ं) से ही लिखा जाता है; उसे स्पष्ट करनेके लिए चन्द्रबिंदुका उपयोग नहीं किया जाता।

यह देखें :—

हिन्दी	गुजराती
बाँस	बांस
ताँत	तांत
चाँद	चांद
दाँत	दांत

अनुस्वार और अर्धानुस्वारका भेद न समझ सकनेके कारण राष्ट्रभाषा सीखनेवाले 'हँसी' को 'हसी', 'चाँद' को 'चान्द' और 'नींद' को 'नीन्द' बोलते और लिखते देखे जाते हैं।

अनुस्वारकी सामान्य भूलोंके उदाहरण यहाँ दिये जाते हैं।

(i) अर्धानुस्वार (चन्द्रबिन्दुके) स्थान पर पूर्णानुस्वार :—

अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध
अधेरा	अँधेरा	नदिया	नदियाँ
आगन	आँगन	पूछ	पूँछ
आच	आँच	बूद	बूँद
कहा	कहाँ	यहा	यहाँ
जाच	जाँच	वहा	वहाँ

(ii) अनावश्यक अनुस्वार :—

अशुद्ध	शुद्ध
कीमत	कीमत
तू	तू
हमेशा	हमेशा

(iii) अनुस्वारका न लगाना :—

अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध
उन्हे	उन्हें	मे	में
जिन्हे	जिन्हें	मै	मैं
तुम्हे	तुम्हें	हमे	हमें
नही	नहीं		

(iv) गलत स्थान पर अनुस्वार—

अशुद्ध	शुद्ध
कुंआ	कुआं
गवांर	गंवार
गावं	गांव
गूथंना	गूंथना
पंहुचना	पहुंचना
मंहगा	महंगा
गवांरना	गंवारना

(४) ज, ज़ और झ

जय	ज़माना	
जवानी	ज़मीन	झंडा
जागीर	ज़हर	झगड़ा
जादू	ज़िन्दगी	झांकना
जीवन	नमाज़	झाग
		झाड़

ऊपर दिये गये उदाहरणोंको देखनेसे 'ज', 'ज़' और 'झ'के उच्चारणका भेद समझमें आ सकेगा। 'ज' और 'झ'के उच्चारणसे तो हम परिचित ही हैं, क्योंकि हिन्दी और गुजराती दोनों भाषाओंमें 'ज' और 'झ' मौजूद हैं। समस्या केवल 'ज़' की है। हिन्दीमें 'ज़' अरबी-फारसीसे आया है। अरबी और फारसीके तत्सम शब्दोंमें ही यह उच्चारण पाया जाता है। गुजरातीभाषियोंके लिए यह उच्चारण नया है। ज़मीन, ज़हर, नमाज़ आदि शब्दोंमें 'ज़' का उच्चारण अंग्रेज़ीके इज़ (Is), हिज़ (His) के 'ज़' जैसा होता है। उच्चारणकी इस विशिष्टताको दिखानेके लिए ही अरबी और फारसीसे आये हुए तत्सम शब्दोंके नीचे नुक्ता या बिन्दी लगाई जाती है।

'ज़' की ध्वनिसे पूर्णतया परिचित न होनेके कारण राष्ट्रभाषा सीखनेवाले नए विद्यार्थियोंसे कुछ इस प्रकारकी भूलें होती हैं —

अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध
मजा	मज़ा	आजादी	आज़ादी
मरीज	मरीज़	हाजिम	हाज़िम
गजा	राजा	रोजी	रोज़ी

ऊपर दिये गए उदाहरणोंमें 'ज़' की जगह 'ज' का गलत प्रयोग किया गया है।

इसी प्रकार 'ज़' के स्थान पर 'ज' का गलत प्रयोग भी होता है। जैसे:—

अशुद्ध	शुद्ध
तुजे	तुझे
बीज	बीज
मुजे	मुझे
समज	समझ

(५) क, ख, ग और फ

क़[illegible]	ख़बर	ग़रीब	फ़क़ीर
क़दम	ख़र्च	ग़[illegible]	फ़र्ज़
क़द्र	ख़ानदान	ग़[illegible]	फ़रमान
क़सम	ख़ुदा	[illegible]	फ़रेब
क़ाबिल	ख़ून	ग़ैर	फ़[illegible]

ऊपर दिये गए उदाहरणोंको ध्यानसे देखें। इनमें क, ख, ग और फ के नीचे नुक़्ता या बिन्दी लगाई गई है। इन अक्षरोंके नीचे बिन्दी केवल इनके उच्चारणको स्पष्ट करनेके लिए लगाई जाती है। अरबी-फ़ारसीमें क़, ख़ और ग़ का उच्चारण हमारे क, ख, ग के उच्चारणकी अपेक्षा अधिक गहरे गलेसे किया जाता है। पाठकोंको चाहिए कि वे इन उच्चारणोंको हिन्दी-उर्दूभाषियोंसे ही सुनकर सीख लें। क्योंकि यह सूक्ष्म भेद शब्दों द्वारा लिखकर स्पष्ट नहीं किया जा सकता।

फ़ारसीके 'फ़' का उच्चारण हमारे 'फ' की अपेक्षा कोमल और हल्का होता है। हम लोग 'फ' का उच्चारण दोनों होंठ

मिलाकर हवाके धक्केके साथ करते हैं, जब कि फ़ारसीके 'फ़' उच्चारण ऊपरके दाँतको नीचेके होंठमें अड़ाकर किया जाता फ़क़ीर, फ़र्ज़ इत्यादि शब्दोंमें 'फ़' का उच्चारण अंग्रेज़ीके 'फ़्लाव और 'फ़िश' के 'f' की तरह होता है।

(६) ड़ और ढ़

(i) डमरू		(ii) ढग	
डर	अकड़		गढ़
डाक	बड़ाई	ढब	पढ़ाई
डाली	रणछोड़	ढेंगे	बाढ़
	झाड़	ढोल	सीढ़ी

ऊपर दिये गए न० (i) और (ii) के शब्दोंको ध्यानसे पढ़ें। न० (i) के अभ्यासमें 'ड' और 'ड़' के उच्चारणका भेद साफ तरहसे मालूम हो जायगा, और इसी तरहसे न० (ii) के अभ्याससे 'ढ' और 'ढ़' का। न० (i) में 'डमरू, डर' इत्यादिमें 'ड' का उच्चार स्पष्ट और तीव्र है, पर 'अकड़' और 'बड़ाई' वगैरामें 'ड़' का उच्चार हल्का और कोमल है। इसी तरहसे न० (ii) में 'ढग', 'ढब' मे 'ढ' का उच्चार स्पष्ट और तीव्र है और 'गढ़' और 'पढ़ाई' वगैरामें हल्का और कोमल।

गुजरातीमें भी 'ड़' और 'ढ़' के उच्चार तो हैं, मगर उनको 'ड' और 'ढ' से ही व्यक्त करते हैं और अभ्यास व अनुसधानसे लेते हैं।

नोट :— नुक्तेवाले 'ड़, ढ़' के सबधमें यह बात याद रखने क है कि ये दोनों अक्षर कभी शब्दके शुरूमें और अनुस्वारके नहीं आते और न ये दोनों कभी द्वित्व ही होते हैं।

अन्य भूलें

उच्चारणकी खामीके कारण ऊपर दी गई भूलोंके अलावा कुछ ले भी हो जाती हैं। पहले अज्ञानवश गलत बोलते हैं और त लिखने लगते हैं।

'ऐ' और 'औ' के गलत उच्चारणके कारण कितने ही 'तैरना' को 'तइरना', 'रैयत' को 'रइयत', 'औरत' को 'अउरत' और 'दौलत' को 'दउलत' भी लिखते देखे जाते हैं।

इसी प्रकार 'या' की जगह 'आ' बोलने और लिखनेकी भूलें भी देखनेमें आती हैं। इसके कुछ उदाहरण नीचे दिये जाते हैं —

अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध
खड़िआ	खड़िया	दुनिआ	दुनिया
गुड़िआ	गुड़िया	नैआ	नैया
गवैंआ	गवैंया	बड़िआ	बड़िया
घटिआ	घटिया	बनिआ	बनिया
चिड़िआ	चिड़िया	भैआ	भैया

ये भूलें 'इआ' की जगह 'इया' बोलने और लिखनेमें ठीक होंगी।

३

हिज्जेकी भूलें

हिन्दी सीखनेवालोंको हिज्जे (जोडणी) की भूलों पर खास ध्यान देना चाहिए। जैसा कि पहले कहा जा चुका है, हिन्दीमें उच्चारण और हिज्जेका बड़ा घनिष्ठ सम्बन्ध है। यदि उच्चारण गलत है तो हिज्जे सही हो ही नहीं सकते। इसलिए पढ़ते और बोलते समय सदा उच्चारणकी शुद्धिका ध्यान रखना चाहिए।

हिज्जेकी भूलोंमें अधिक भूलें ह्रस्व-दीर्घकी होती हैं। इन भूलोंसे मुक्ति पानेका सीधा तरीका यह है कि जो भी कोई नया शब्द हम सुनें या सीखें उसकी ह्रस्व या दीर्घ मात्राका हम शुद्ध और सही उच्चारण करें। उदाहरणके तौर पर 'मधु' और 'वधू' शब्दोंको सीखते समय यदि हम इनकी ह्रस्व और दीर्घकी मात्राओंका ठीक उच्चारण भी सीख लें, तो इनमें कभी भूल होनेकी कोई सम्भावना नहीं रहेगी। इसका होने

पर भी यदि किसी शब्दके लिखनेके संबंधमें शक हो तो उसे टालें नहीं। तत्काल कोशमें देखकर अपनी शंकाका समाधान कर लें।

लिखनेकी उसकी भूलोंसे कभी-कभी तो अर्थका अनर्थ हो जाता है। जैसे —

(i) 'रामदास लुट गया' लिखनेके बजाय लिख दिया जाता है 'रामदास लूट गया'। इन दोनों वाक्योंका अर्थ भिन्न है। पहलेका अर्थ है कि रामदासको किसीने लूट लिया, और दूसरेका अर्थ हो जाता है रामदास किसीको लूट कर चला गया।

(ii) 'उसका सूत बड़ा मोटा है' यानी उसने बड़ा मोटा काता है। पर 'उसका सुत बड़ा मोटा है' इसका अर्थ हुआ कि उसका लड़का बड़ा मोटा है।

मतलब यह है कि हमें ह्रस्व, दीर्घ, अनुस्वार आदिके कारण होनेवाली भूलों पर पूरा पूरा ध्यान रखना चाहिए।

आये दिन होनेवाली ह्रस्व-दीर्घकी कुछ भूलोंके उदाहरण नीचे दिये जाते हैं —

(i) 'ई' की जगह 'इ' की भूलें —

अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध
किमत	कीमत	महिन	महीन
चिज	चीज	महिना	महीना
तिसरा	तीसरा	यकिन	यकीन
नजदिक	नजदीक	विनति	विनती
नारि	नारी	शरिर	शरीर
निंद	नींद	सति	सती
निचे	नीचे	स्त्रि	स्त्री
पिछे	पीछे	स्विकार	स्वीकार
बिमार	बीमार	हारजित	हारजीत

(ii) 'इ' की जगह 'ई' की भूलें :—

अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध
ईस	इस	फीर	फिर
कठीनाई	कठिनाई	कठीन	कठिन
कीस	किस	बीलकुल	बिलकुल
कोशीश	कोशिश	मीलना	मिलना
गीरना	गिरना	रीहा	रिहा
चाहीए	चाहिए	लीया	लिया
जीस	जिस	विकमीन	विकमिन
नीकट	निकट	वीकट	विकट
नीकलना	निकलना	विदीत	विदित

(iii) 'ऊ' की जगह 'उ' की भूलें :—

अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध
उपर	ऊपर	भुल	भूल
कानुन	कानून	मजमुन	मजमून
जरुरत	जरूरत	महसुस	महसूस
तुने	तूने	मालुम	मालूम
दुध	दूध	लुट	लूट
दुसरी	दूसरी	वधु	वधू
पुछना	पूछना	सुर्य	सूर्य
पुज्य	पूज्य	साहु	साहू
फिजुल	फिजूल	हिन्दु	हिन्दू

(iv) 'उ' की जगह 'ऊ' की भूलें :—

अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध
तूम	तुम	पूकारो	पुकारो
तूम्हारा	तुम्हारा	प्रचूर	प्रचुर
दूग	दुग	मजबूर	मजबुर
पहूँचना	पहुँचना	मूख	मुख

ह्रस्व-दीर्घकी भूलोंके कुछ उदाहरण दिये जा चुके हैं।
अलावा कुछ और भूलोंके उदाहरण और उनके सही
रूप नीचे दिये जाते हैं —

(i)

अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध
चूना	चुना	चीन्नी	चिन्नी
गूस्सा	गुस्सा	चीट्ठी	चिट्ठी
दील्ली	दिल्ली	नूम्ना	नुम्ना
गूम्न	गुम्न	लूच्छ	लुच्छ

जब संयुक्ताक्षरके अन्य स्वर पर भार हो तो उसके पहले 'इ'
या 'उ' की मात्रा ह्रस्व रहती है।

(ii)

अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध
पालीयाँ	पालियाँ	दागीयाँ	दागियाँ
जिन्दगीयाँ	जिन्दगियाँ	पोथीयाँ	पोथियाँ
जूतीयाँ	जूतियाँ	नीवीयाँ	नीवियाँ
टोपीयाँ	टोपियाँ	सदीयाँ	सदियाँ

ईकारान्त स्त्रीलिंग शब्दोंके बहुवचनके रूपोंमें दीर्घ 'ई' ह्रस्व
'इ' में बदल जाती है।

(iii)

अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध
गती	गति	मती	मति
जाती	जाति	रीती	रीति
पती	पति	व्यक्ती	व्यक्ति
भक्ती	भक्ति	स्थिती	स्थिति

संस्कृतसे आए हुए तत्सम शब्दोंकी अन्त्य 'ति' अधिकतर ह्रस्व
होती है।

(iv)

अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध
कनिष्ट	कनिष्ठ	घनिष्ट	घनिष्ठ
घनिष्ट	घनिष्ठ	बलिष्ट	बलिष्ठ
ज्येष्ट	ज्येष्ठ	श्रेष्ट	श्रेष्ठ

ऊपरकी भूलें 'इष्ट' की जगह 'इष्ठ' रखनेसे सुधरेंगी, क्योंकि श्रेष्ठतावाचक शब्दोंका प्रत्यय 'इष्ठ' है 'इष्ट' नहीं।

(i) 'इत' प्रत्ययके कारण होनेवाली भूलें :—

अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध
अकुरीत	अकुरित	लिखीत	लिखित
पराजीत	पराजित	विकसीत	विकसित
परिचीत	परिचित	सकुचीत	सकुचित

याद रखें कि भूत कृदन्त के 'इत' प्रत्ययमें 'इ' ह्रस्व है।

(ii) 'ईय' प्रत्यय :—

अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध
जातिय	जातीय	देशिय	देशीय
प्रातिय	प्रातीय	वर्गिय	वर्गीय
राजकिय	राजकीय	स्वर्गिय	स्वर्गीय

याद रखें कि 'ईय' प्रत्ययमें 'ई' दीर्घ है।

(iii) 'इक' प्रत्यय :—

(अ)

अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध
इतिहासिक	ऐतिहासिक	विज्ञानिक	वैज्ञानिक
पुराणिक	पौराणिक	ससारिक	सासारिक
मुखिक	मौखिक	समाजिक	सामाजिक

'इक' प्रत्यय लगनेसे शब्दके प्रथम अक्षरमें वृद्धि होती है। 'अ' का 'आ', 'इ' का 'ऐ' और 'उ' का 'औ' हो जाता है।

(आ)

अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध
औद्योगीक	औद्योगिक	नैतीक	नैतिक
ऐच्छीक	ऐच्छिक	शारीरीक	शारीरिक
दैनीक	दैनिक	स्थानीक	स्थानिक

'इक' प्रत्ययमें 'इ' ह्रस्व है।

(४) 'ईन' प्रत्यय:—

अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध
अर्वाचिन	अर्वाचीन	प्राचिन	प्राचीन
नविन	नवीन	कुलिन	कुलीन
पराधिन	पराधीन	स्वाधिन	स्वाधीन

'ईन' प्रत्यय में 'ई' दीर्घ है।

(५) अनावश्यक प्रत्यय:—

अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध
आलस्यता	आलस्य	पांडित्यता	पांडित्य
ऐक्यता	ऐक्य	माधुर्यता	माधुर्य
धैर्यता	धैर्य	सौंदर्यता	सौंदर्य

भाव प्रत्ययान्त शब्दोंके बाद प्रत्यय लगाना ठीक नहीं है।

अभ्यास

इन वाक्योंकी हिज्जेकी भूलें सुधारिये:—

१. ईश्वर बड़ा दयालु है।
२. भिक्षु आनन्द बड़े ध्यानी थे।
३. मैं अपनी भूल कबूल करता हूँ।
४. परस्पर दोनों पहलेसे परिचीत हैं।
५. आइए यहाँ बैठिए।
६. हमारे देशमें लोग सुर्यको देवता मानते हैं।
७. ईस चिजकी क्या किमत है?
८. रामको तेरस्येका बड़ा शोक है।
९. कुटुम्बकी देखरेख हमेशा बड़े बुढ़े करते हैं।
१०. आशादीमें ही जिन्दगीका मज़ा है।
११. मुझे अपना हक मिलना चाहिए।
१२. मेरा नोकर मोन रहता है।
१३. कल तीन कैदी गैरहाजिर थे।

बहुतसे गुजराती हिन्दीके मिलते-जुलते तद्भव शब्दोंमें गुजरातीमें जहाँ अंतमें 'ळ' होता है वहाँ हिन्दीमें 'ल' लिखा जाता है।

(v)

गुजराती	हिन्दी
कमळ	कमल
कळा	कला
जाळ	जाल
डाळ	डाल
बळ	बल
भूगोळ	भूगोल

हिन्दीमें 'ळ' नहीं है। 'ळ' की जगह 'ल' लिखा जाता है।

(vi)

गुज०	हिंदी	गुज०	हिंदी
वहेन	वहन	लहेर	लहर
महेल	महल	वहेम	वहम
रहेम	रहम	शहेर	शहर

ऐसे बहुतसे शब्दोंमें गुजरातीमें जहाँ पर 'हे' का प्रयोग होता है, वहाँ हिन्दीमें 'ह' का प्रयोग होता है।

(vii)

गुज०	हिन्दी	गुज०	हिन्दी
अहेसान	एहसान	महेनत	मेहनत
बहेतर	बेहतर	महेमान	मेहमान
पहेलवान	पहलवान	महेरबान	मेहरबान

ऐसे गुजराती शब्दोंके हिन्दी रूपोंमें 'हे' की जगह 'ह' आता है।

(viii)

गुज०	हिन्दी	गुज०	हिन्दी
कॅंची	कैंची	शेतान	शैतान
केफियत	कैफियत	गेरियत	गैरियत
खेरियत	खैरियत	मेदान	मैदान

जहाँ गुजरातीमें 'ए' का उच्चार होता है, वहाँ हिन्दीमें इस उच्चारको बतानेके लिए 'ऐ' का उपयोग करते हैं।

સવા શેર	सवा सेर	सवा सेर
દોઢ શેર	दोढ सेर	डेढ़ सेर
પોણા બશેર	पोणा दो सेर	पौने दो सेर
અઢી શેર	अढी सेर	ढाई सेर
સાડાત્રણ શેર	साडा तीन सेर	साढ़े तीन सेर

(ii) क्रमः—

પહેલો	पहेला	पहला
બીજો	दुसरा	दूसरा
ત્રીજો	तिसरा	तीसरा
ચોથો	चोथा	चौथा
પાંચમો	पांचमा	पाँचवाँ
છઠ્ઠો	छट्ठा	छठा
સાતમો	सातमा	सातवाँ
આઠમો	आठमा	आठवाँ
નવમો	नवमा	नवाँ

अभ्यास

(१) नीचे लिखे गुजराती शब्दोंके शुद्ध हिन्दी रूप लिखिये :—

आस्ते, ओरत, उपर, कपुर, कोन, किमत, जाहेर, नजदिक, नहि, नोकर, बिमार, मुश्केल, महिना, मोत, वसत, शेतान, सोनेरी, गमार, गदकी, फुरसद।

(२) नीचे दिये गए गुजराती शब्दोंके पर्यायवाची हिन्दी शब्द लिखिये :—

केळवणी, छेल्लुं, धोरण, दाखलो, सैका, सत्र, माणस, लोक, पसार थवुं, हरीफाई, फरजियात, रमतगमत।

(७) आम (સામાન્ય) — जो खेल तुम खेल रहे हो उसके आम नियम तुम्हें आने ही चाहिएँ।

आम (કેરી) — आजकल आमका मौसम है।

(८) ओर (તરફ) — मेरी ओर देखो।

और (અને) — राम और श्याम दोनों भाई हैं।

(९) उदार (ઉદાર) — हरिश्चन्द्र दान देनेमें बड़े उदार थे।

उधार (ઉધાર) — उधार लेकर खानेसे भूखा रहना बेहतर है।

(१०) एतवार (રવિવાર) — आज एतवारकी छुट्टी है।

एतबार (વિશ્વાસ) — क्या आपको मेरी बातका एतबार नहीं?

(११) गृह (ઘર) — गृहकी स्वच्छता गृहिणी पर निर्भर है।

ग्रह (ગ્રહ) — आजकल आपके ग्रह अच्छे नहीं हैं।

गिरह (ગાંઠ) — १. उसके मनमें तुम्हारे लिए गिरह पड़ गई है।

(તસુ) — २. एक गजमें १६ गिरह होते हैं।

(१२) जरा (વૃદ્ધાવસ્થા) — बीती जवानी आयी जरा।

जरा (થોડા) — जरा इधर देखिए।

(१३) जूठ (એઠું) — जूठ छोड़ना अच्छा नहीं।

झूठ (અસત્ય) — झूठ बोलना पाप है।

(१४) दिन (દિવસ) — एक महीनेमें तीस दिन होते हैं।

दीन (ગરીબ) — भगवान दीनोंका रक्षक है।

(१५) निश्चित (નક્કી) — कल निश्चित समय पर हाजिर हो जाइए।

निश्चिन्त (બેફિકર) — सब ठीक हो जायगा, आप निश्चिन्त रहिए।

(१६) परिमाण (માત્રા) — आयुर्वेदिक औषधियाँ उचित परिमाणमें ली जानी चाहिएँ।

परिणाम (ફલસ્વરૂપ) — उसने चोरी की, परिणाम यह हुआ कि उसे जेल जाना पड़ा।

(२८) सास (સાસુ) — सास-बहूका झगड़ा घरका नाश कर देता है।
सांस (શ્વાસ) — कसरत करते समय नाकसे सांस लो।

(२९) सुजन (સજ્જન) — आप जैसे सुजन संसारमें बहुत थोड़े हैं।
सूजन (સોજો) — उसके पैरोंकी सूजन अभी नहीं उतरी।

(३०) सुत (પુત્ર) — दशरथ अपने सुतके वियोगमें विलाप करने लगे।
सूत (સૂતર) — मैं प्रतिदिन सूत कातता हूँ।

(३१) सोच (વિચાર) — इतनी-सी बात पर इतना सोच क्यों करते हो?
शौच (દસ્ત) — शौचमें गडबड होनेसे अनेकों बीमारियाँ उठ खडी होती हैं।

(३२) हरि (ભગવાન) — अपने भक्तोंकी रक्षाके लिए हरिने अवतार लिया।
हरी (લીલી) — हरी दूब पर खेलो।

अभ्यास

(१) नीचे दिये गए शब्दोंका वाक्योंमें प्रयोग करके अर्थ स्पष्ट कीजिये. —

शकल, सकल, भवन, भुवन; सजा, सज़ा; गिरह, ग्रह; बेहतर, बहत्तर; सतर, सत्तर; जटित, जटिल; उदर, उधर; शंकर, सकर; जलज, जलद; हिमाकत, हिकमत; नीर, नीड़; प्रति, प्रीति; लोक, लोग; उपहार, उपाहार।

(२) वाक्यके अंतमें दिये गए शब्दोंमें से उचित शब्द खाली स्थानोंमें रखिये —

(१) —— सातवीं कक्षा — पढता हूँ। (मैं, में)
(२) रामने कहा — यह किस — पुस्तक है। (की, कि)
(३) मोहनने मोहनके — केले —। (लिये, लिए)
(४) मुझे गानेका ऐसा — था कि फेल होनेका बिलकुल — नहीं हुआ। (शोक, शौक)

अभ्यासियोंको व्याकरणकी मददसे लिंग-ज्ञान-विषयक नियमोंको अच्छी तरह समझ लेना चाहिए। यहाँ हम कुछ सरल और सामान्य नियम दे रहे हैं, यद्यपि इन नियमोंमें अपवाद भी बहुत हैं।

पुल्लिग

(१) अनाजोंके नाम पुल्लिग होते हैं। जैसे — गेहूँ, जौ, चना, बाजरा, चावल इत्यादि। अपवाद — जुवार, मक्की (मक्का)

(२) धातुओं और रत्नोंके नाम पुल्लिग होते हैं। जैसे — सोना, तांबा, लोहा, फौलाद, हीरा, पन्ना, मोती इत्यादि। अपवाद — चाँदी, मणि इत्यादि।

(३) शरीरके अवयवोंके नाम प्राय. पुल्लिग होते हैं। जैसे — कान, ललाट, कपोल, हाथ, पाँव आदि। अपवाद — आँख, जीभ, कमर, टाँग आदि।

(४) वृक्षोंके नाम अधिकतर पुल्लिग होते हैं। जैसे — बड़, पीपल, नीम, आम, देवदार, सागौन आदि। अपवाद — इमली।

(५) शहरों, समुद्रों और पर्वतोंके नाम पुल्लिग होते हैं। जैसे — कलकत्ता, मद्रास, हिंद महासागर, प्रशांत महासागर, हिमालय, अरावली।

(६) समयके विभागके नाम पुल्लिग होते हैं। जैसे — दिन, सप्ताह, मास, वर्ष आदि। अपवाद — रात, शताब्दी।

स्त्रीलिंग

(१) नदियोंके नाम प्राय स्त्रीलिंग होते हैं। जैसे — गंगा, यमुना, ब्रह्मपुत्रा, महानदी, तापती इत्यादि।

(२) भाषाओंके नाम प्राय. स्त्रीलिंग होते हैं। जैसे — बंगाली, सिंधी, मराठी इत्यादि।

(३) तिथि, नक्षत्र और राशियोंके नाम स्त्रीलिंग होते हैं। जैसे — दूज, तीज, रोहिणी, आर्द्रा, कन्या, तुला।

गुजराती और हिन्दीमें लिंग-भेद

गुजरातीमें तीन लिंग हैं, जब कि हिन्दीमें केवल दो ही हैं। हिन्दीमें नपुंसकलिंग या नान्यतर जाति नहीं है। इसलिए गुजराती-भाषियोंके सामने यह समस्या खड़ी होती है कि वे गुजरातीकी नान्यतर जातिकी संज्ञाओंको हिन्दीमें कौनसे लिंगमें बरतें। इस संबंधमें एक मोटा नियम यह है कि संस्कृत और गुजरातीके नान्यतर जातिके शब्द कुछ अपवादोंको छोड़कर अधिकतर हिन्दीमें पुल्लिंगमें बरते जाते हैं।

कितने ही ऐसे शब्द जो गुजरातीमें पुल्लिंग हैं हिन्दीमें स्त्रीलिंगमें बरते जाते हैं। जैसे — अग्नि, आत्मा, आवाज इत्यादि। इसी प्रकार कुछ शब्द, जो गुजरातीमें स्त्रीलिंग हैं, हिन्दीमें पुल्लिंग माने जाते हैं। जैसे — व्यक्ति, मजा इत्यादि।

अभ्यासके लिए लिंग-भेदकी एक फेहरिस्त यहाँ दी जाती है।

(i) नीचे दिये हुए शब्द गुजरातीमें नान्यतर जातिमें हैं और हिन्दीमें पुल्लिंग हैं:—

अनार	कपूर	चरित्र	बल	वेतन	शरीर
अमृत	कमल	खून	बहाव	व्यक्तित्व	शासन
आँसू	घी	बचपन	भाग्य	शरबत	सोना

(... नीचे दिये हुए नान्यतर जातिके शब्द हिन्दीमें स्त्रीलिंग

नाक मृत्यु संतान
आयु जेब

...गुजरातीमें नरजातिके हैं, मगर

बरसात शपथ
महिमा शराब
वायु शिकार
विजय सौंस

(iv) नीचेके शब्द गुजरातीमें नारीजातिमें आते हैं, मगर हिंदीमें पुल्लिग हैं.—

असर	मतलब	लालच
क़सूर	मजा	व्यक्ति
कॉलेज	मिनिट	स्कूल
फर्ज	सेकंड	सदूक

कुछ प्रचलित हिन्दी शब्दोंके लिंग

पुल्लिग

अगूर	जोश	मूल्य
आम	तारा	मुटापा
आलू	तिल	मौसम
इम्तिहान	दरख्त	मच्छर
इन्साफ	दरवाजा	मदिर
ईमान	दिमाग	यत्र
एतबार	देवता	यकीन
		रिश्ता
		लड़कपन
		लहू

स्त्रीलिंग

अँगुली	जायदाद	परीक्षा
अकड़	जीभ	पायल
अक़्ल	जेब	पुकार
आँख	झुंझलाहट	पुड़िया
आग	झील	पुलिस
आदत	डलिया	फ़सल
आबादी	डाँट	भीड़
आयु	डिबिया	भूल
औषधि	ढाल	मंज़िल
औलाद	तंदुरुस्ती	मदद
इजाज़त	तकरार	माला
इमारत	तनख़्वाह	राख
कमर	तरकीब	रेल
क़लम	तराज़ू	लकीर
कसरत	तलाश	लगाम
किताब	ताक़त	लाश
किश्ती	तारीख़	विजय
क़ीमत	तारीफ़	सिफ़ारिश
क़ुदरत	तालीम	संध्या
कुर्सी	थकावट	सँभाल
गंध	दवात	सड़क
गर्दन	दाख (किशमिश)	सरकार
गुफा	दीवार	सवारी
चाय	दुकान	सहायता
खाट	दौलत	साँस
चोट	धुन	सेहत
छाँह	धूप	हँसी
जगह	नक़ल	हथेली
ज़मीन	नज़र	हद
जागीर	नफ़रत	हवा

ऊपर दिये गए शब्दोंके लिंगके अभ्यासमें सहायता तो मिलेगी, पर इतनेसे ही लिंगकी भूलों पर काबू नहीं पाया जा सकता। क्योंकि शब्दका लिंग जानना एक बात है और उसका ठीक ठीक प्रयोग कर सकना दूसरी बात है। हिन्दीमें लिंगकी सत्ता बड़ी व्यापक है। अव्यय शब्दोंको छोड़कर बाकी सब पर उसका असर पड़ता है। संज्ञाके लिंगके अनुरूप ही सर्वनाम, विशेषण, क्रियापद और संबंध विभक्तियाँ बदलना पड़ता है।

लिंगके कारण होनेवाली सामान्य भूलें और उनके शुद्ध रूप नीचे दिये जाते हैं —

	गलत	सही
(i)	मैं अपनी फर्ज अदा करता हूँ।	मैं अपना फर्ज अदा करता हूँ।
	तुम्हारी स्कूल कहाँ है?	तुम्हारा स्कूल कहाँ है?
	हमारी इम्तिहान मार्चमें है।	हमारा इम्तिहान मार्चमें है।
	उसकी कुसूर क्या है?	उसका कुसूर क्या है?
	यह मेरी कॉलिज है।	यह मेरा कॉलिज है।
	कैसा ध्वनि है यह?	कैसी ध्वनि है यह?
	आपका जय हो।	आपकी जय हो।
	यह पुस्तक किसका है?	यह पुस्तक किसकी है?
	उसका देह दुर्बल है।	उसकी देह दुर्बल है।
	उनका आवाज कोमल है।	उनकी आवाज कोमल है।

संज्ञाके लिंगके अनुसार ही सर्वनामको रखनेसे ऐसी भूलें सुधरेंगी।

	गलत	सही
(ii)	पीतल पीली होती है।	पीतल पीला होता है।
	आज मौसम सुहावनी है।	आज मौसम सुहावना है।
	यह कॉलिज अच्छी है।	यह कॉलिज अच्छा है।
	गांधीजी एक बड़ी व्यक्ति थी।	गांधीजी एक बड़े व्यक्ति थे।

यह सड़क बहुत चौड़ा है।	यह सड़क बहुत चौड़ी है।
आजकल कपास महँगा है।	आजकल कपास महँगी है।
इधर बरसात थोड़ा है।	इधर बरसात थोड़ी है।
उसका नाक लम्बा है।	उसकी नाक लम्बी है।

संज्ञाके लिंगके ही अनुसार विशेषण होना चाहिये। इस बातका ध्यान रखनेसे ऐसी भूलें सुधरेंगी।

(iii)

गलत	सही
कपूर फौरन उड़ जाती है।	कपूर फौरन उड़ जाता है।
मेरी आम सड़ी हुई है।	मेरा आम सड़ा हुआ है।
कल स्कूलमें खूब मजा आई।	कल स्कूलमें खूब मजा आया।
मुझे जुकाम हुई है।	मुझे जुकाम हुआ है।
तुमने झूठ क्यों बोली?	तुमने झूठ क्यों बोला?
अखबार आ गई क्या?	अखबार आ गया क्या?
आत्मा नहीं मरता।	आत्मा नहीं मरती।
यह देह एक दिन मिट्टीमें मिल जायगा।	यह देह एक दिन मिट्टीमें मिल जायगी।
घीमें बदबू आता है।	घीमें बदबू आती है।
बर्फ़ दो आने सेर बिकता है।	बर्फ़ दो आने सेर बिकती है।

ऊपरकी भूलें संज्ञाके लिंगके अनुसार क्रिया रखनेसे सुधरेंगी।

(iv)

गलत	सही
बंबईकी बाजार अच्छी है।	बंबईका बाजार अच्छा है।
मुझे केंकड़ेकी गरदन पसन्द है।	मुझे केंकड़ेका गरदन पसन्द है।
यह सांतकी जाल है।	यह सांतका जाल है।
उसमें मुकाबला करनेका सामर्थ्य नहीं है।	उसमें मुकाबला करनेकी सामर्थ्य नहीं है।

भगवान् भक्तोंका पुकार सुनती है।	भगवान् भक्तोंकी पुकार सुनते हैं।
परमात्माका महिमा अपार है।	परमात्माकी महिमा अपार है।

संज्ञाके लिंगके अनुसार ही सबंध विभक्ति (का, की) का उपयोग करना चाहिये।

अभ्यास

(१) नीचे दिये गये शब्दोंके लिंग बताइये :—

घास, आलू, सड़क, जादू, तराजू, किताब, भाग्य, तकदीर, अवसान, मृत्यु, जेब, सफर, आयु, समाज, वायु, बाजार, मौसम, उपाय, घबराहट, कसरत, साँस, आवाज, मूँछ, चोटी।

(२) इन वाक्योंकी भूलें सुधारिये —

(१) गांधी जैसी पवित्र व्यक्ति अब कहाँ है।
(२) अकस्मात ही उसका मृत्यु हो गया।
(३) क्लाइवकी देहात पेंसिल बनानेके चाकूसे हुई।
(४) स्टेशन पर कई लोगोंके जेब कट गए।
(५) जहाँ धुआँ होगा वहीं अग्नि होगा।
(६) मुझे आपकी खत मिली।
(७) औलाद हो तो ऐसा हो।
(८) धोने पर भी घीका चिकनाहट नहीं जाता।
(९) जहाँ देखो वहीं घास उग रहा है।
(१०) उसका सारा देह सड़ गया।

अन्य पुल्लिंग संज्ञाएँ जो आकारान्त नहीं हैं और जि
दोनों वचनोंमें समान रहती हैं:—

एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन
कवि	कवि	भाई	भाई	किसान	किसान
गुरु	गुरु	मकान	मकान	शहर	शहर
डाकू	डाकू	मुनि	मुनि	शिकार	शिकार
बालक	बालक	विद्यार्थी	विद्यार्थी	सिद्धांत	सिद्धांत

मगर इस नियममें कुछ अपवाद भी हैं। कुछ संबंधवाचक स
दूसरी आकारान्त संज्ञाएँ एकवचन और बहुवचनमें समान भी रह
हैं। जैसे—

(i) कुछ संबंधवाचक आकारान्त पुल्लिंग संज्ञाएँ जो एकवचन
और बहुवचनमें समान रहती हैं:—

एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन
काका	काका	पिता	पिता
चाचा	चाचा	फूफा	फूफा
जामाता	जामाता	बाबा	बाबा
दादा	दादा	भ्राता	भ्राता
नाना	नाना	मामा	मामा

(ii) संस्कृतकी आकारान्त पु० संज्ञाएँ जो दोनों वचनोंमें
समान रहती हैं—

एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन
कर्ता	कर्ता	युवा	युवा
देवता	देवता	योद्धा	योद्धा

(ग) आदरके लिए भी एकवचनकी संज्ञाका प्रयोग बहुवचनमें होता है। जैसे—

ये मेरे पिता हैं।

गांधीजी एक महान व्यक्ति थे।

(ग) कुछ और भूलें—

प्रत्येक, हरएक, एक एक, आदि शब्दोंके साथ आनेवाले संज्ञा शब्दोंका प्रयोग एकवचनमें होता है। इन शब्दोंके प्रयोगमें ऐसी भूलें होती हैं—

गलत	सही
(१) क्लासमें से प्रत्येक लड़के पास होंगे।	क्लासमें से प्रत्येक लड़का पास होगा।
(२) प्रत्येक सिपाही जीवित लौटे।	प्रत्येक सिपाही जीवित लौटा।
(३) नियम हर व्यक्तियोंके लिए हैं।	नियम हरएक व्यक्तिके लिए है।
(४) हरएक मजदूर अफसरसे मिलें।	हरएक मजदूर अफसरसे मि
(५) आपके भाषणके एक एक शब्द तुले हुए थे।	आपके भाषणका एक एक श तुला हुआ था।

अभ्यास

नीचे लिखे वाक्योंकी भूलें सुधारिये—

१ आपके साथियों कब आनेवाले हैं?

२. अपनी सीटो रिजर्व हो गई हैं क्या?

३. डाकुओ आ रहे हैं।

४. मैंने पचास चीकू खाया।

५ आपमें से हरएक मुझसे मिलने आयेंगे।

६. प्रत्येक व्यक्तिको दस दस रुपया मिलेगा।

७. बागमें बहुतसे पक्षियो है।

८. मेलेमें बहुत आदमियो आया है।

९. विद्वानों आपसमें बहस कर रहे हैं।

नोट :—विशेष जानकारीके लिए हिन्दी व्याकरण देखें।
विभक्ति-सम्बन्धी भूलें चार भागोंमें बाँटी जा सकती हैं:—
(१) विभक्ति-लोप।
(२) अनावश्यक विभक्ति।
(३) गलत विभक्तिका प्रयोग।
(४) विभक्ति लगाने पर सर्वनामका रूप न बदलनेके कारण।

(१) विभक्तिके लोपकी भूलें

जहाँ विभक्तिकी आवश्यकता होती है वहाँ कितनी ही बार विभक्ति नहीं लगाते। जैसे—

गलत	सही
१ मैं लड़केको बुलाया।	मैंने लड़केको बुलाया।
२. हम खाना खाया।	हमने खाना खाया।
३. सुरेश किताब पढ़ी।	सुरेशने किताब पढ़ी।
४. कुत्ता बिल्लीको मारा।	कुत्तेने बिल्लीको मारा।
५. उन्होंने बहुतसे ग्रंथों अनुवाद किये हैं।	उन्होंने बहुतसे ग्रंथोंका अनु[illegible] किया है।
६ विद्यार्थी पढ़ना चाहिये।	विद्यार्थीको पढ़ना चाहिये।
७. ऊषा कुत्ता पीटती है।	ऊषा कुत्तेको पीटती है।
८ सेठजी नौकरको काम सौंपा।	सेठजीने नौकरको काम सौंपा।

(२) अनावश्यक विभक्तियोंके प्रयोगकी भूलें

जहाँ विभक्तियोंकी आवश्यकता नहीं होती वहाँ भी विभक्तिका प्रयोग कर दिया जाता है। जैसे—

गलत	सही
१. मैंने बाजारसे पुस्तक लाया।	मैं बाजारसे पुस्तक लाया।
२. मैंने किताबको पढ़ी।	मैंने किताब पढ़ी।

३. मैंने सिंहको देखे हैं।	मैंने सिंह देखे हैं।
४. वह बम्बईमें गया है।	वह बंबई गया है।
५ राम अपने घरको गया।	राम अपने घर गया।
६ इस जगहमें सब तरहकी सुविधा है।	इस जगह सब तरहकी सुविधा है।
७. मैं आपके पाँव पर पडता हूँ।	मैं आपके पाँव पडता हूँ।
८. दरअसलमें यह बात सच है।	दरअसल यह बात सच है।
९. उन्होंने धन परस्परमें बाँट लिया।	उन्होंने धन परस्पर बाँट लिया।
१०. आपने व्यर्थको कष्ट उठाया।	आपने व्यर्थ कष्ट उठाया।

(३) ग़लत विभक्तियोंके प्रयोगकी भूलें

(i) ग़लत	सही
१. वह अपने मित्रको मिलने गया।	वह अपने मित्रसे मिलने गया।
२ मैं आपको पाँच रुपये माँगता हूँ।	मैं आपसे पाँच रुपये माँगता हूँ।
३. मैं आपको वादा करता हूँ।	मैं आपसे वादा करता हूँ।
४. विद्यार्थी शिक्षकको सवाल पूछता है।	विद्यार्थी शिक्षकसे सवाल पूछता है।
५ मैंने उसको बात कर ली है।	मैंने उससे बात कर ली है।

ऊपरके वाक्योंमें 'से' की जगह 'को' का ग़लत प्रयोग हुआ है।

(ii) ग़लत	सही
१. मोहनको दो भाई हैं।	मोहनके दो भाई हैं।
२. इस घरको दो दरवाजे हैं।	इस घरके दो दरवाजे हैं।
३. उसको दो बहिनें हैं।	उसके दो बहिनें हैं।
४. उसको मेहमान आए हैं।	उसके मेहमान आये हैं।
५ मोहनके बुख़ार आया है।	मोहनको बुख़ार आया है।

ऊपरके चार वाक्योंमें 'के' की जगह 'को' का प्रयोग ग़लत है। पर अंतिम वाक्यमें 'को' का प्रयोग सही है।

(iii) गलत	सही
१. आपके तरह मैं बेवकूफ नही।	आपकी तरह मैं बेवकूफ नही।
२. रातको जागनेके वजहसे नींद आती है।	रातको जागनेकी वजहसे नींद आती है।
३. शहरके तरफ चलो।	शहरकी तरफ चलो।
४. मैं आपकी बारेमें नहीं जानता।	मैं आपके बारेमें नहीं जानता।
५. वह रामकी साथ था।	वह रामके साथ था।
६. हम पेड़की नीचे बैठे हैं।	हम पेड़के नीचे बैठे हैं।
७. काम करनेकी बजाय आराम करो।	काम करनेके बजाय आराम करो।

ऊपरके पहले तीन वाक्योंमें 'की' की जगह 'के' का गलत प्रयोग हुआ है। बाकीके चार वाक्योंमे 'के' की जगह 'की' का प्रयोग गलत है।

(iv) गलत	सही
१. गोपाल आप सबमें अच्छा है।	गोपाल आप सबसे अच्छा है।
२. यह इमारत सबमें ऊँची है।	यह इमारत सबसे ऊँची है।
३. आप मुझे सबमें ज्यादा पसद हैं।	आप मुझे सबसे ज्यादा पसंद हैं।
४. सबमें हिलमिल कर रहिये।	सबसे हिलमिल कर रहिये।

ऊपरके वाक्योंमें 'से' की जगह 'में' का गलत प्रयोग हुआ है।

(v) गलत	सही
१. जूतामें कील चुभती है।	जूतेमें कील चुभती है।
२. आप फ़ायदाकी बात करते हैं।	आप फायदेकी बात करते हैं।
३. हथौड़ासे हाथ दब गया।	हथौड़ेसे हाथ दब गया।
४. पड़ोसीका लड़काको बुलाओ।	पड़ोसीके लड़केको बुलाओ।
५. संतराका रग अच्छा होता है।	संतरेका रग अच्छा होता है।
६. परदाकी प्रथा खराब है।	परदेकी प्रथा खराब है।
७. समझौताकी शर्तें क्या हैं?	समझौतेकी शर्तें क्या हैं?
८ तोताको पकड़ो।	तोतेको पकड़ो।

कारके वाक्योंमें 'ए' की जगह 'आ' का गलत प्रयोग हुआ है।

(४) विभक्ति लगाने पर सर्वनामका रूप न बदलनेके कारण होनेवाली भूलें

यह, ये, वह, वे, कौन और जो के रूप प्रत्यय लगाते ही बदल जाते हैं। जैसे—

विभक्ति-रहित रूप	विभक्ति लगाने पर रूप
यह	इस
ये	इन
वह	उस
वे	उन
कौन	किस, किन
जो	जिस, जिन
कोई	किस, किन

विभक्ति लगाने पर विभक्ति-रहित रूप रखनेसे जो भूलें होती हैं वे नीचे दी जाती हैं।

(i) यह—इस

गलत	सही
१. यह घरमें कौन रहता है?	इस घरमें कौन रहता है?
२. यह तालाबमें मछलियाँ हैं।	इस तालाबमें मछलियाँ हैं।
३. यह आदमीको मैं जानता हूँ।	इस आदमीको मैं जानता हूँ।
४. यह लिए मैं आपके पास आया।	इस लिए मैं आपके पास आया।

(ii) ये—इन

गलत	सही
१. ये लोगोंमें एका नहीं है।	इन लोगोंमें एका नहीं है।
२. मैं ये पुस्तकोंको पढ़ चुका हूँ।	मैं इन पुस्तकोंको पढ़ चुका हूँ।
३. ये कारणोंसे उन्हें दंड मिला।	इन कारणोंसे उन्हें दंड मिला।
४. ये लड़कोंको बुलाओ।	इन लड़कोंको बुलाओ।

(iii) यह — उस

१. यह आदमीको दौलतका घमंड है।	उस आदमीको दौलतका घमंड है।
२. तुम यह स्थान पर बैठ जाओ।	तुम उस स्थान पर बैठ जाओ।
३. यह जगह खूब चालित हुई।	उस जगह खूब चालित हुई।
४ मैं तुमसे यह स्थान पर मिलूँगा।	मैं तुमसे उस स्थान पर मिलूँगा।

(iv) ये — उन

१ ये लोगोंको अनाज चाहिए।	उन लोगोंको अनाज चाहिए।
२. आज ये लोगोंको भी निमंत्रण दिया है।	आज उन लोगोंको भी निमंत्रण दिया है।

(v) कौन — किस, किन

१. यह शीशा कौनने तोड़ा?	यह शीशा किसने तोड़ा?
२ आप कौनको बुलाते हैं?	आप किसको (किसे) बुलाते हैं?
३. मैं कौन स्थान पर प्रतीक्षा करूँ।	मैं किस स्थान पर प्रतीक्षा करूँ?
४. ये थैलियाँ कौनकी हैं?	ये थैलियाँ किनकी हैं?

(vi) जो — जिस, जिन

१ जोको पुकारूँ वही आवे।	जिसको पुकारूँ वही आवे।
२. जो बातके लिए आपने कहा था मैंने कर दी है।	जिस बातके लिए आपने कहा मैंने कर दी है।
३ मैं जोको पुकारूँ वे ही आवें।	मैं जिनको पुकारूँ वे ही आवें
४. जो लड़कोंको प्रवासमें जाना हो वे तैयार हो जाएँ।	जिन लड़कोंको प्रवासमें जाना हो वे तैयार हो जाएँ।

(vii) कोई — किसी

१. मैंने कोईका क्या बिगाड़ा है?	मैंने किसीका क्या बिगाड़ा है?
२. कोईका पेन यहाँ रह गया।	किसीका पेन यहाँ रह गया।
३. मैं कोईको नहीं जानता।	मैं किसीको नहीं जानता।
४. कोईसे पूछो तो सही।	किसीसे पूछो तो सही।
५ कोई एक विषय पर निबंध लिखो।	किसी एक विषय पर निबंध लिखो।

(viii) सर्वनामके संबंधमें यह बात और याद रखने लायक है कि पुरुषवाचक सर्वनामके बाद उसी व्यक्तिका यदि फिरसे निर्देश करना हो तो 'अपना', 'अपनी', 'अपने' आदि सर्वनामोंका प्रयोग करना चाहिये। इस संबंधमें अक्सर भूलें होती हैं। जैसे —

ग़लत	सही
१ मैं मेरा काम करता हूँ।	मैं अपना काम करता हूँ।
२ वे उनकी धुनमें मस्त हैं।	वे अपनी धुनमें मस्त हैं।
३ तू तेरा काम कर।	तू अपना काम कर।
४ तुम तुम्हारे घर जाओ।	तुम अपने घर जाओ।
५ हम हमारा काम करते हैं।	हम अपना काम करते हैं।

अभ्यास

(१) नीचे दिये गये वाक्योंकी भूलें सुधारिये :—

१. मैं आपको सवाल पूछता हूँ।

२ काला आदमीको पकड़ो।

३ पीला पतंगको उड़ाओ।

४. एक राजाको चार पुत्र थे।

५ आप दोस्तको क्यों पीटते हैं?

६ मुसलमान लोगो तीन बार [illegible] पढ़ते हैं।

७ ये कामके लिए आप [illegible] मैं [illegible]।

८. मेरे पर विश्वास न हो तो आप [illegible] पूछ लें।

९ ये लोगोंमें एका नहीं है।

१० [illegible]?

११. [illegible]।

१२ [illegible]।

१३ [illegible]।

१४. [illegible]

(२) नीचेके वाक्योंमें विभक्तियां जोड़िये :—

१. इस पेड़ — बंदर बैठा है।
२. मुझे आप — बात करना पसन्द नहीं।
३. मैं उस — नफरत करता हूँ।
४. मैं आप — यकीन कर सकता हूँ।
५. इतनी-सी बात — आप क्यों गुस्सा करते हैं?
६. यह जाति — शक्ति है।
७. यह मान — पराया है।
८. उसने राम — प्रार्थना की।
९. क्या आप — मुझ — विश्वास नहीं?
१०. मैं आप — वादा करता हूँ कि अब उस — शोर नहीं करूँगा।

७

वाक्यरचनाकी भूलें

लिंग, वचन और विभक्ति संबंधी भूलोंका जिक्र किया जा चुका है। अब वाक्यरचनाकी भूलें देखें।

(i)

	गलत	सही
१.	छोटा बच्चेको मत मारो।	छोटे बच्चेको मत मारो।
२.	कच्चा फलको मत तोड़ो।	कच्चे फलको मत तोड़ो।
३.	खोटा पैसाकी क्या आश?	खोटे पैसेकी क्या आश?
४.	सच्चा आदमीकी जीत होती है।	सच्चे आदमीकी जीत होती है।
	टिकाऊ	खरे सोनेका जेवर टिकाऊ होता है।

यह याद रखना चाहिए कि जब विशेष्यको विभक्तिका प्रत्यय लगता है तो आकारान्त विशेषण एकारान्त हो जाते हैं।

(ii) गलत	सही
१. मैंने लड़कीको बुलाई।	मैंने लड़कीको बुलाया।
२. क्या आपने रमाको पहचानी?	क्या आपने रमाको पहचाना?
३. आपने व्यर्थ ही इस तसवीरको खरीदी।	आपने व्यर्थ ही इस तसवीरको खरीदा।
४. मैंने इस रकमको बड़ी मुश्किलसे जुटाई।	मैंने इस रकमको बड़ी मुश्किलसे जुटाया।
५. लड़केने इस बातको पिताके मुंहसे सुनी है।	लड़केने इस बातको पिताके मुंहसे सुना है।

याद रखिये जब कर्ताके 'ने' और कर्मके 'को' विभक्ति लगती है तो क्रिया सदा पुल्लिंग एकवचनमें रहती है।

(iii) गलत	सही
१. रामकी टोपी सोहनसे कीमती है।	रामकी टोपी सोहनकी टोपीसे कीमती है।
२. महेशकी आवाज रमेशसे पतली है।	महेशकी आवाज रमेशकी आवाजसे पतली है।
३. मेरी सेहत उसके भाईसे अच्छी है।	मेरी सेहत उसके भाईकी सेहतसे अच्छी है।

जिस चीजकी तुलना करनी हो उसका उल्लेख तुलना करते समय होना जरूरी है। पहले वाक्यमें रामकी टोपीकी तुलना सोहनकी टोपीसे की गई है, न कि स्वयं सोहनसे। और तुलना हमेशा एकसी चीजोंमें हो सकती है। टोपीकी तुलना टोपीसे ही हो सकती है, न कि सोहनसे।

(२) नीचेके वाक्योंमें विभक्तियाँ जोड़िये :—

१. इस पेड़ — कोयल बैठी है।
२. मुझे आप — बात करना पसन्द नहीं।
३. मैं उस — नफ़रत करता हूँ।
४. मैं आप — यकीन कर सकता हूँ।
५ इतनी-सी बात — आप क्यों गुस्सा करते हैं?
६. यह जाति — क्षत्रिय है।
७. यह बात — पक्का है।
८ उसने राम — प्रार्थना की।
९ क्या आप — मुझ — विश्वास नहीं?
१०. मैं आप — वादा करता हूँ कि अब उस — क्रोध नहीं करूँगा।

७

वाक्यरचनाकी भूलें

लिंग, वचन और विभक्ति संबंधी भूलोंका ज़िक्र किया जा चुका है। अब वाक्यरचनाकी भूलें देखें।

(i)

गलत	सही
१. छोटा बच्चेको मत मारो।	छोटे बच्चेको मत मारो।
२. कच्चा फलको मत तोडो।	कच्चे फलको मत तोडो।
३. खोटा पैसाकी क्या आशा?	खोटे पैसेकी क्या आशा?
४. सच्चा आदमीकी जीत होती है।	सच्चे आदमीकी
५. खरा सोनेका जेवर टिकाऊ होता है।	खरे

(iv) गलत	सही
१. बैल और ऊँट चर रहा था।	बैल और ऊँट चर रहे थे।।
२. भेड़, बकरी और गाय दूध देती है।	भेड़, बकरी और गाय दूध देती हैं।
३. राम और लक्ष्मण भाई था।	राम और लक्ष्मण भाई थे।
४. दया और रमा बहिन है।	दया और रमा बहिनें हैं।

एक ही लिंग, वचन और पुरुषकी प्राणीवाचक संज्ञाएँ जब 'और'से जुड़ी हों तब क्रिया उसी लिंग और बहुवचनमें आती है।

(v) १. राम, लक्ष्मण और जानकी वनमें गये।
२. जंगलमें भालू, बाघ और लोमड़ी रहते हैं।
३ उस समय राजा और प्रजा सुखी थे।
४ राजा और रानी भी मूर्छित हो गये।
५ गाय और बैल चर रहे हैं।

अगर भिन्न भिन्न लिंगोंकी दो या अधिक प्राणीवाचक संज्ञाएँ एकवचनमें आयें तो क्रिया अक्सर पुल्लिंग बहुवचनमें आती है।

(vi) १. बाजारमें आम और नारंगियाँ बिकती हैं। (है नहीं)
२ मेरे पास बाल्टी, लोटा और थालियाँ थीं। (थी नहीं)
३ उनके पास दो कुत्ते और एक टोपी थी। (थे नहीं)

अगर भिन्न-भिन्न लिंग-वचनकी एकसे अधिक संज्ञाएँ अप्रत्ययकर्ताकारकमें आये, तो क्रियाके लिंग-वचन अंतिम कर्ताके अनुसार होते हैं।

(vii) १ मेरे पास स्लेट और पेंसिल है। (हैं नहीं)
२ नम्रता और सत्य ही मेरे जीवनका ध्येय है। (हैं नहीं)
३. हँसना, रोना, गाना सबको आता है। (आते हैं नहीं)
४. मेरी बातें सुनकर महारानीको हर्ष और आश्चर्य हुआ। (हुए नहीं)
५. तालावमें से लोटा, कलसा और टोकनी निकली। (निकले नहीं)

१. मास्टरजी, तुम कल हमारे घर आयेगा?

२. कल हमारे यहाँ राष्ट्रपति आनेवाला है।

इन दोनों वाक्योंके सही रूप ये होंगे —

१. मास्टरजी, आप कल हमारे घर आयेंगे?

२. कल हमारे यहाँ राष्ट्रपति आनेवाले हैं।

अपनेसे उम्रमें या ओहदेमें बड़े व्यक्तियोंके लिये हमेशा सूचक शब्दोंका प्रयोग किया जाता है। अपनेसे बड़ोंके नाम या व बाद सम्मान प्रकट करनेके लिए 'जी'का भी प्रयोग करते हैं। जैसे

गांधीजी, पंतजी, मंत्रीजी, संपादकजी आदि।

अपनेसे बड़ोंके लिए 'आप' का उपयोग किया जाता है। देखें

गलत	सही
१. मंत्रीजी, तुम्हारा पिता क्या करता है?	मंत्रीजी, आपके पिता क्या क हैं?
२. मैथिलीशरण हमारा राष्ट्रकवि है	मैथिलीशरण हमारे राष्ट्रकवि है
३. यह मेरा पिता है और यह है मेरा बड़ा भाई।	यह मेरे पिता हैं और यह मेरे बड़े भाई।
४. विनोबाजी कहता है, "भूदानसे बढ़कर कोई दान नहीं।"	विनोबाजी कहते हैं, "भूदानसे बढ़कर कोई दान नहीं।"
५. शिवाजी सच्चा देशभक्त था।	शिवाजी सच्चे देशभक्त थे।

यदि रसियें मानार्थे कर्ता एकवचनमें होता है पर क्रिया ब वचनमें रहती

नोट

आदमीके

है।

अपनेसे छोटे या बहुत ही निकटों इसका उपयोग ईश्वरके लिए भी हो

बराबरवालोंके लिए किया जाता है।

(iii) वाक्यरचनामें क्रमका भी खयाल रखना जरूरी है।
न वाक्योंको देखें :—

(१) सूर और तुलसी हिन्दीके महाकवि हैं, उन्होंने रामायण
ौर सूरसागर जैसे महान ग्रंथोंकी रचना की है।

(२) नेहरू, बिड़ला और गामाकी गिनती भारतवर्षके माने हुए
हलवान, धनी और देशभक्तके रूपमें की जाती है।

इन दोनों वाक्योंमें क्रमदोष है। सूरने सूरसागर और तुलसीने
मायण लिखी। इसी तरहसे दूसरे वाक्यमें पहलवान, धनी और देश-
क्त शब्द नामोंके अनुसार क्रममें नहीं हैं। इन दोनों वाक्योंको
स तरह लिखना चाहिये —

(१) सूर और तुलसी हिन्दीके महाकवि हैं, उन्होंने सूरसागर
र रामायण जैसे महान ग्रंथोंकी रचना की है।

(२) नेहरू, बिड़ला और गामाकी गिनती भारतवर्षके माने
हुए देशभक्त, धनी और पहलवानके रूपमें की जाती है।

अभ्यास

नीचे दिये गये वाक्योंमें रचनाकी भूलें सुधारिये :—

१ बुरा कामसे बचो।
२. अच्छा लोगोंके साथ उठो बैठो।
३. क्या आपने उस पुस्तकको मँगाई?
४. मेरा जूता आपसे अच्छा है।
५. रामके पास एक घोड़ा और एक घोड़ी थे।
६. रहीम, करीम और नूरजहाँ मेरे यहाँ बैठी हैं।
७ मेरे पास किताब और कापी है।
८. यह मेरा चाचाजी है।
९. प्रधानमंत्री हमारे स्कूलमें आनेवाला है।
१०. मैंने बाजार जाना है।
११. तुम क्या माँगता है?
१२. हम यह काम करने सकता है।

१. मास्टरजी, तुम कल हमारे घर आयेगा?

२. कल हमारे यहाँ राष्ट्रपति आनेवाला है।

इन दोनों वाक्योंके सही रूप ये होंगे:—

१. मास्टरजी, आप कल हमारे घर आयेंगे?

२ कल हमारे यहाँ राष्ट्रपति आनेवाले हैं।

अपनेसे उम्रमें या ओहदेमें बड़े व्यक्तियोंके लिए हमेशा आदर-सूचक शब्दोंका प्रयोग किया जाता है। अपनेसे बड़ोंके नाम या ओहदेके बाद सम्मान प्रकट करनेके लिए 'जी'का भी प्रयोग करते हैं। जैसे —

गांधीजी, पंतजी, मंत्रीजी, संपादकजी आदि।

अपनेसे बड़ोंके लिए 'आप' का उपयोग किया जाता है। देखें:—

गलत	सही
१. मंत्रीजी, तुम्हारा पिता क्या करता है?	मंत्रीजी, आपके पिता क्या करते हैं?
२. मैथिलीशरण हमारा राष्ट्रकवि है	मैथिलीशरण हमारे राष्ट्रकवि हैं।
३. यह मेरा पिता है और यह है मेरा बड़ा भाई।	यह मेरे पिता हैं और यह हैं मेरे बड़े भाई।
४. विनोबाजी कहता है, "भूदानसे बढ़कर कोई दान नहीं।"	विनोबाजी कहते हैं, "भूदानसे बढ़कर कोई दान नहीं।"
५. शिवाजी सच्चा देशभक्त था।	शिवाजी सच्चे देशभक्त थे।

याद रखिये मानार्थ कर्ता एकवचनमें होता है पर क्रिया बहु-वचनमें रहती है।

नोट:—'तू' का उपयोग अपनेसे छोटे या बहुत ही निकटके आदमीके लिए किया जाता है। इसका उपयोग ईश्वरके लिए भी होता है।

'तुम' का उपयोग अकसर बराबरवालोंके लिए किया जाता है।

(iii) वाक्यरचनामें क्रमका भी खयाल रखना जरूरी है। इन वाक्योंको देखें :—

(१) सूर और तुलसी हिन्दीके महाकवि हैं, उन्होंने रामायण और सूरसागर जैसे महान ग्रंथोंकी रचना की है।

(२) नेहरू, बिड़ला और गामाकी गिनती भारतवर्षके माने हुए पहलवान, धनी और देशभक्तके रूपमें की जाती है।

इन दोनों वाक्योंमें क्रमदोष है। सूरने सूरसागर और तुलसीने रामायण लिखी। इसी तरहसे दूसरे वाक्यमें पहलवान, धनी और देशभक्त शब्द नामोंके अनुसार क्रममें नहीं हैं। इन दोनों वाक्योंको इस तरह लिखना चाहिये —

(१) सूर और तुलसी हिन्दीके महाकवि हैं, उन्होंने सूरसागर और रामायण जैसे महान ग्रंथोंकी रचना की है।

(२) नेहरू, बिड़ला और गामाकी गिनती भारतवर्षके माने हुए देशभक्त, धनी और पहलवानके रूपमें की जाती है।

अभ्यास

नीचे दिये गये वाक्योंमें रचनाकी भूलें सुधारिये :—

१. बुरा कामसे बचो।
२. अच्छा लोगोंके साथ उठो बैठो।
३. क्या आपने उस पुस्तकको मँगाई?
४. मेरा जूता आपसे अच्छा है।
५. रामके पास एक घोड़ा और एक घोड़ी थे।
६. रहीम, करीम और नूरजहां मेरे यहां बैठी हैं।
७ मेरे पास किताब और कापी है।
८. वह मेरा चाचाजी है।
९ प्रधानमन्त्री हमारे स्कूलमें आनेवाला है।
१०. मैंने बाजार जाना है।
११. तुम क्या सोचता है?
१२. हम यह काम करने सकता है।

१३. क्या जानती है मौत तेरे गिर पर?
१४. हम पढ़नेकू जाना है।
१५ यह काम अभी ही करो।
१६. यह भेंट स्वीकारो।
१७. उसने दो कप चाय बुलवाई।
१८. दुर्घटना घटते घटते बची।
१९. मेरे पांच भाई है।

८

अर्थभेदके कारण होनेवाली भूलें

कभी कभी एक ही शब्दका अलग अलग भाषाओंमें अलग अलग अर्थ होता है। जैसे 'पलग' यह शब्द फारसीका है और हिन्दीका भी। मगर फारसीमें इसका अर्थ है 'चीता' और हिन्दीमें है 'अच्छी और बडी चारपाई'। इसी तरहसे हिन्दी और गुजरातीमें कुछ शब्द ऐसे हैं कि जिनके अर्थ दोनों भाषाओंमें अलग अलग हैं। कुछ ऐसे शब्द नीचे दिये जाते हैं —

(१) घड़ियाल :— मैंने अफ्रीकासे घड़ियाल मँगाई है। गुजरातीमें इसका उपयोग 'घड़ी' के लिए किया जाता है। हिन्दीमें 'घड़ियाल' मगरमच्छको कहते हैं, और बडे घंटेको भी। जैसे — मंदिरोंमें घड़ियाल बज रहे हैं।

(२) तंत्री :— मोघानजी एक प्रसिद्ध तंत्री हैं। गुजरातीमें तंत्री' का अर्थ संपादक होता है, मगर हिन्दीमें इसका अर्थ 'वीणा' 'वीणा बजानेवाला' है।

(३) प्रसिद्ध :— यह पुस्तक किस सालमें प्रसिद्ध हुई? गुजरातीमें 'प्रसिद्ध' होनेका अर्थ 'मशहूर' होना और 'प्रका' होना दोनों है। यहाँ यह 'प्रकाशित' होनेके अर्थमें आया है। हिंदीमें 'प्रसिद्ध' 'प्रकाशित' के अर्थमें नहीं आता।

(४) बोड़ा:—बोड़के सर पर बाल नहीं होते।

गुजरातीमें 'बोडा' गंजे आदमीको कहते हैं। मगर हिन्दीमें 'बोड़ा' उसे कहते हैं जिसके दाँत टूट गये हों।

(५) भूरा:—आकाशका रंग भूरा है।

गुजरातीमें 'भूरा' नीले रंगको कहते हैं। मगर हिन्दीमें खाकी

१३. क्या नाचती है मौत मेरे सिर पर?
१४. हम पढ़नेकू जाता है।
१५ यह काम अभी ही करो।
१६. यह भेंट स्वीकारो।
१७. उसने दो कप चाय बुलवाई।
१८. दुर्घटना घटते घटते बची।
१९. मेरे पाँच भाई है।

८

अर्थभेदके कारण होनेवाली भूलें

कभी कभी एक ही शब्दका अलग अलग भाषाओंमें अलग अलग अर्थ होता है। जैसे 'पलंग' यह शब्द फारसीका है और हिन्दीका भी। मगर फारसीमें इसका अर्थ है 'चीता' और हिन्दीमें है 'अच्छी और बड़ी चारपाई'। इसी तरहसे हिन्दी और गुजरातीमें कुछ शब्द ऐसे हैं कि जिनके अर्थ दोनों भाषाओंमे अलग अलग हैं। कुछ ऐसे शब्द नीचे दिये जाते हैं —

(१) घड़ियाल :— मैंने अमेरिकासे घड़ियाल मँगाई है। गुजरातीमें इसका उपयोग 'घड़ी' के लिए किया जाता है। हिन्दीमें 'घड़ियाल' मगरमच्छको कहते हैं, और बड़े घंटेको भी। जैसे — मंदिरोंमें घड़ियाल बज रहे हैं।

(२) तंत्री :— गोपालजी एक प्रसिद्ध तंत्री हैं। गुजरातीमें 'तंत्री' का अर्थ संपादक होता है, मगर हिन्दीमें इसका अर्थ 'वीणा' या 'वीणा बजानेवाला' है।

(३) प्रसिद्ध :— यह पुस्तक किस सालमें प्रसिद्ध हुई?
गुजरातीमें 'प्रसिद्ध' होनेका अर्थ 'मशहूर' होना और 'प्रकाशित' होना दोनों है। यहाँ यह 'प्रकाशित' होनेके अर्थमें आया मगर हिंदीमें 'प्रसिद्ध' शब्द 'प्रकाशित' के अर्थमें नहीं आता

(४) बोडा :— बोड़ेके सर पर बाल नहीं होते।

गुजरातीमें 'बोडा' गंजे आदमीको कहते हैं। मगर हिन्दीमें 'बोडा' उसे कहते हैं जिसके दाँत टूट गये हों।

(५) भूरा :— आकाशका रंग भूरा है।

गुजरातीमें 'भूरा' नीले रंगको कहते हैं। मगर हिन्दीमें खाकी या मटमैले रंगको कहते हैं।

(६) मोटा :— मोटा भाई।

गुजरातीमें 'मोटा' बड़ेके अर्थमें आता है। मगर हिन्दीमें इसका अर्थ है 'हृष्टपुष्ट'। जैसे पहलवान खूब मोटा है।

(७) रेल :— रेलमें हजारों आदमी बह गये।

गुजरातीमें 'रेल' का अर्थ 'बाढ़' है, मगर हिन्दीमें इसका अर्थ रेलगाड़ी है।

(८) राजीनामा :— उसने अपना राजीनामा दे दिया।

'राजीनामा' गुजरातीमें त्यागपत्रके अर्थमें आता है। ऊपरके वाक्यका अर्थ हिन्दीमें 'नौकरी छोड़ना' नहीं समझा जायगा, क्योंकि 'राजीनामा' का प्रयोग हिन्दीमें उस 'इकरारनामे' के लिए होता है जो 'वादी' और 'प्रतिवादी' अपना झगड़ा मिटानेके लिए आपसमें करते हैं। जैसे —अदालतने उनका राजीनामा मंजूर कर लिया और मुकदमा खारिज कर दिया।

(९) शिक्षा :— न्यायाधीशने उसे चार सालकी शिक्षा कर दी।

हिन्दीमें 'शिक्षा' का प्रचलित अर्थ वह है जो गुजरातीमें शिक्षणका है।

ऐसे कुछ और शब्द, जिनका गुजराती और हिन्दीमें एक अर्थ नहीं है, नीचे दिये जाते हैं :—

शब्द	गुजरातीमें अर्थ	हिन्दीमें अर्थ
अकस्मात	अकस्मात (अथडावानो गंभीर बनाव)	अचानक
अभ्यास	लेसन-वाचन	रटना, प्रैक्टिस

(४) बोड़ा :— बोडेके सर पर बाल नहीं होते।

गुजरातीमें 'बोडा' गजे आदमीको कहते हैं। मगर हिन्दीमें 'बोडा' उसे कहते हैं जिसके दाँत टूट गये हों।

(५) भूरा :— आकाशका रंग भूरा है।

गुजरातीमें 'भूरा' नीले रंगको कहते हैं। मगर हिन्दीमें खाकी या मटमैले रंगको कहते हैं।

(६) मोटा :— मोटा भाई।

गुजरातीमें 'मोटा' बडेके अर्थमें आता है। मगर हिन्दीमें इसका अर्थ है 'हृष्टपुष्ट'। जैसे पहलवान खूब मोटा है।

(७) रेल :— रेलमें हजारों आदमी बह गये।

गुजरातीमें 'रेल' का अर्थ 'बाढ' है, मगर हिन्दीमें इसका अर्थ रेलगाडी है।

(८) राजीनामा :— उसने अपना राजीनामा दे दिया।

'राजीनामा' गुजरातीमें त्यागपत्रके अर्थमें आता है। ऊपरके वाक्यका अर्थ हिन्दीमें 'नौकरी छोडना' नहीं समझा जायगा, क्योंकि 'राजीनामा' का प्रयोग हिन्दीमें उस 'इकरारनामे' के लिए होता है जो 'वादी' और 'प्रतिवादी' अपना झगडा मिटानेके लिए आपसमें करते हैं। जैसे — अदालतने उनका राजीनामा मंजूर कर लिया और मुकद्दमा खारिज कर दिया।

(९) शिक्षा :— न्यायाधीशने उसे चार सालकी शिक्षा कर दी।

हिन्दीमें 'शिक्षा' का प्रचलित अर्थ वह है जो गुजरातीमें शिक्षणका है।

ऐसे कुछ और शब्द, जिनका गुजराती और हिन्दीमें एक अर्थ नहीं है, नीचे दिये जाते हैं :—

शब्द	गुजरातीमें अर्थ	हिन्दीमें अर्थ
अकस्मात	अकस्मात (अपघातवाली गंभीर बनाव)	अचानक
अभ्यास	लेखन-वाचन	यत्न, प्रैक्टिस

१३. क्या नाचती है मौत तेरे सिर पर?
१४. हम पखेरू जाता है।
१५ यह काम अभी ही करो।
१६. यह भेंट स्वीकारो।
१७. उसने दो का नाम सुन्वाई।
१८ दुर्घटना घटते घटते बची।
१९. मेरे पाँच भाई है।

८

अर्थभेदके कारण होनेवाली भूलें

कभी कभी एक ही शब्दका अलग अलग भाषाओंमें अलग
लग अर्थ होता है। जैसे 'पलंग' यह शब्द फारसीका है और
हिन्दीका भी। मगर फारसीमें इसका अर्थ है 'चीता' और हिन्दीमें है
अच्छी और बडी चारपाई'। इसी तरहसे हिन्दी और गुजरातीमें
कुछ शब्द ऐसे हैं कि जिनके अर्थ दोनों भाषाओंमें अलग अलग हैं।
कुछ ऐसे शब्द नीचे दिये जाते हैं —

(१) घड़ियाल :— मैंने अफ्रीकासे घडियाल मँगाई है। गुज-
रातीमें इसका उपयोग 'घडी' के लिए किया जाता है। हिन्दीमें 'घडि-
याल' मगरमच्छको कहते हैं, और बडे घंटेको भी। जैसे — मंदिरोंमें
घड़ियाल बज रहे हैं।

(२) तंत्री :— सोपानजी एक प्रसिद्ध तंत्री हैं। गुजरातीमें
'तंत्री' का अर्थ संपादक होता है, मगर हिन्दीमें इसका अर्थ 'वीणा'
या 'वीणा बजानेवाला' है।

(३) प्रसिद्ध :— यह पुस्तक किस सालमें प्रसिद्ध हुई?
गुजरातीमें 'प्रसिद्ध' होनेका अर्थ 'मशहूर' होना और 'प्रका-
शित' होना दोनों हैं। यहाँ यह 'प्रकाशित' होनेके अर्थमें आया है।
मगर हिंदीमें 'प्रसिद्ध' शब्द 'प्रकाशित' के अर्थमें नहीं आता।

अनुसंधान	संबंध, क्रम	खोज
आबादी	समृद्धि	जनसंख्या
आलू	जरदालू	आलू, बटाटा
एलची	इलायची	राजदूत
ओला	लीला शेकेला चणा	बारिशमें गिरनेवाली
कपाल	कपाळ	खोपड़ी
गज	२ फूटनो गज	३ फूटका गज
गुण	मार्क, गुण	अच्छी आदतें
घंटी	दळवानी घंटी	बजानेकी छोटी घं छोटी लुटिया
चप्पु	चाकु	नाव चलानेका डांड
चोकड़ी	(×) आवी आकृति	चौकड़ी, छलांग
छबि	चित्र, फोटो	सुन्दरता
टोकरी	बगाडवानी टोकरी, घंटडी	बाँसकी बनी कंडिका
तरल	चपळ	प्रवाही
दफ्तर	विद्यार्थीनी चोपडीओ राखवानी थेली	ऑफिस, कार्यालय
भाईबंध	मित्र	रिश्तेदार
मीठा	मीठु (पु० नमक, वि० गळयु)	जिसमें मिठास हो
लहँगा	लेंघो, पायजामो	घाघरा
लुगड़ा	लुगडा (पहेरवाना)	फटे पुराने कपडे
शीशा	मोटी बाटली	मुंह देखनेका दर्पण
सत्तर	१७	७०
सींग	मगफळी	शृंग, सींग (गाय, भैंस इत्यादिके)

परिशिष्ट — ३

मुहावरे और कहावतें

आप हाथ धो लें, खाना तैयार है।

आप अपने खानेसे हाथ धो लें, अब वह न मिलेगा।

ऊपर दिये हुए वाक्योंमें 'हाथ धो लेना' का प्रयोग हुआ है। पहले वाक्यमें इन शब्दोंका वही अर्थ है जो इनसे निकलता है। मगर दूसरे वाक्यमें अर्थ बदल गया है और इन शब्दोंका अर्थ 'आशा छोड़ देना' या 'निराश हो जाना' होता है।

दो या दोसे अधिक शब्दोंके मेलसे जब कुछ और ही अर्थ निकले, जो उनके साधारण अर्थसे अलग हो, तो ऐसे शब्दसमूहको मुहावरा कहते हैं।

कुछ घटनाओंके आधार पर जो बातें प्रचलित हो जाती हैं, ऐसी बातोंको कहावतें या लोकोक्तियाँ कहते हैं। जैसे 'न नौ मन तेल होगा न राधा नाचेगी'।

(१) कुछ ऐसे मुहावरे जिनका उपयोग अधिक होता है यहाँ दिये जाते हैं.—

१. **अंधेकी लकड़ी :—** सिर्फ एक सहारा; मुझ अंधेकी लकड़ी तू ही है, तू मुझे छोड़कर कहाँ जाता है?

२. **अगर मगर करना :—** बहाने बनाना; आप अपने काम पर अभी चले जायें, मेरे पास अगर मगर करनेसे कुछ काम न

पर आप कुल्हाड़ी मारना :— अपना नुकसान
से जवाब देकर आप अपने पाँव पर कुल्हाड़ी

४. आगमें घी डालना :—गुस्सेको और ज्यादा करना; वह तो पहलेसे ही गुस्से हो रहा है, बच्चोंकी लड़ाईकी बात उससे कहना आगमें घी डालना होगा।

५. आपेसे बाहर हो जाना :—गुस्से या खुशी पर क़ाबू न रखना। नौकरकी बेपरवाही पर वह आपेसे बाहर हो गया। पास होनेकी खुशीमें क्यों आप आपेसे बाहर हो रहे हैं; ज़रा सोच समझकर खर्च करें।

६ कलेजा छलनी हो जाना :—सख्त बातसे दुःखी होना; दोस्तकी भली-बुरी बातोंसे मेरा कलेजा छलनी हो गया है।

७. कलेजा ठंडा होना :—तसल्ली होना, संतोष होना; स्कूलमें बच्चोंकी प्रगति देखकर मेरा कलेजा ठंडा हो गया।

८. गोबर-गणेश :—बदसूरत, सुस्त, मूर्ख; उसे यह काम मैं नहीं सौंप सकता, वह तो गोबर-गणेश है। अजी, उसका फोटो अपने पास रखोगे! वह तो गोबर-गणेश है।

९. घाव पर नमक छिड़कना :—दुःखीको और दुःखी करना; दुःखमें दुःख बढ़ाना। उसे पहले ही व्यापारमें घाटा आ गया है, अब आप ताने मारकर क्यों उसके घाव पर नमक छिड़कते हैं ?

१०. घोड़े बेचकर सोना :—बेफ़िक्रीकी नींद सोना; आज सुबह बरात बिदा हो गई, तभी तो वह अब घोड़े बेचकर सो रहा है।

११. चंडूखानेकी गप :—झूठी खबर; स्कूल आज खुल गया, यह कैसे हो सकता है? एक महीनेकी छुट्टियाँ हैं, यह तो चंडूखानेकी गप है।

१२. चाँद पर थूकना :—भले आदमीकी बुराई करना, और इससे खुद बदनाम होना; गांधीजी पर निरर्थक इलज़ाम लगाना चाँद पर थूकना है।

१३. जान पर खेलना:— जानको खतरेमें डालना; बरसातके मौसममें इस नदीको तैर कर पार करना जान पर खेलना है।

१४. जूते चाटना:— खुशामद करना; तुम अच्छी तरह अभ्यास करो, परीक्षकोंके जूते चाटनेसे क्या होगा?

१५. टका-सा जवाब देना:— साफ इनकार कर देना; नौकरीके लिए मैं अपने भाईको उसके पास बड़ी आशाओंसे लेकर गया था, मगर उसने टका-सा जवाब दे दिया।

१६. थालीका बैंगन:— वह आदमी जिसकी अपनी कोई राय न हो; उसके भरोसे पर यह काम नहीं किया जा सकता, वह तो थालीका बैंगन है।

१७ दर दरकी खाक छानना.— इधर उधर फिरना; एक जगह जम कर काम करो, दर दरकी खाक छाननेसे कुछ न होगा।

१८ दांत खट्टे करना:— हराना, नीचा दिखाना; सन् १९१४ की लड़ाईमें हिन्दुस्तानी सिपाहियोंने फ्रान्समें जर्मनोंके दांत खट्टे कर दिये।

१९ दाल न गलना:— काबू न चलना, जो चाहो सो करो, मगर उनके पास आपकी दाल न गलेगी।

२०. दो कौड़ीका आदमी:— बिलकुल निकम्मा आदमी; नीच आदमी; जीवनके मसलों पर उससे क्या चर्चा करूँ? वह तो दो कौडीका आदमी है।

२१. दो दिनका मेहमान:— जल्दी ही मर जानेवाला; उसकी बीमारी बढ़ती जा रही है, वह तो अब दो दिनका मेहमान लगता है।

२२. नाक कटना:— बदनामी होना; बेइज्जती होना; उसके जेल जानेसे तो खानदानकी नाक कट गई।

२३. नौ दो ग्यारह होना:— भाग जाना; उसे मार कर वह नौ दो ग्यारह हो गया; पुलिस उसका पता भी अभी तक नहीं लगा सकी।

२४. पत्थरकी लकीर:— अमिट बात; उसका शाप पत्थरकी लकीर है।

२५. पानी पानी होना:— शरमिन्दा होना; तुम्हारी असभ्य बातोंसे मैं पानी पानी हो गया।

२६. बाग बाग होना:— बहुत खुश होना, उसके पास होनेकी खबर सुनकर मैं बाग बाग हो गया।

२७. बाल बाँका न होना:— जरा भी दुख या हानि न होना; आप बेफ़िक्र रहें, मेरे रहते हुए उनका बाल भी बाँका न होगा।

२८. बुद्धि पर पत्थर पड़ना:— बुद्धि खराब हो जाना या अक्ल पर आफ़त आना; क्या तुम्हारी अक्ल पर पत्थर पड़ गये, जो बच्चेको इतना मारा कि उसे बुखार चढ़ गया?

२९. मिट्टीका माधो:— मूर्ख, बेवकूफ, उससे इस मामलेमें क्या राय लें? वह तो मिट्टीका माधो है।

३०. राईका पहाड़ बनाना:— छोटी बातोंको बड़ी बना देना; उसकी बीमारीकी खबर तो तुम जरूर देना, मगर राईका पहाड़ न बना देना।

३१. हवासे बातें करना:— बहुत तेज चलना, मोटर तो हवासे बातें करती है।

३२. हवा हो जाना:— भाग जाना, गायब हो जाना; वह तो यहाँसे कभीका हवा हो गया।

(२) शरीरके अंगोंके अनेक मुहावरे बन गये हैं। उनमें से अधिक उपयोगमें आनेवाले कुछ ये हैं:—

आँख

१. आँख आना— आँखोंका दुखना; बरसातमें मत फिरो, नहीं तो आँखें आ जायेंगी।

२. आँखका तारा — बहुत प्यारा; माँके लिए बेटा उसकी आँखका तारा है।

३. आँख छुपाना — शरमाना; ये तो तुम्हारे बड़े भाई ही हैं; इनसे क्यों आँख छुपाती हो?

४. आँख दिखाना :— धमकाना; डाँटना; मैं ठीक समय पर तो आ गया हूँ, फिर भी आप क्यों आँख दिखाते हैं?

५. आँखसे गिरना :— बेइज्जत होना; वह अपनी शरारतोंसे सबकी आँखसे गिर गया है।

६. आँखें खुल जाना :— समझ आ जाना; होशियार हो जाना; इस दुर्घटनासे उसकी आँखें खुल गईं।

७. आँखों पर परदा पड़ जाना :— धोखा खा जाना; उसकी चिकनी-चुपडी बातोंसे मेरी आँखों पर परदा पड गया।

८. आँखोंमें धूल या खाक झोंकना :— धोखा देना; हिसाबके काममें वह इतना होशियार है कि तुम उसकी आँखोंमें धूल नहीं झोंक सकते।

दांत

९ दांत काटी रोटी — बहुत ही प्रेम होना; उसकी मेरी दोस्ती दाँत काटी रोटी है।

१० दांत खट्टे करना :— हराना, उसने कुश्तीमें बाहरसे आये हुए पहलवानके दांत खट्टे कर दिये।

११. दांत पीसना :— बहुत ही गुस्सा करना; वह मुझ पर दाँत तो खूब पीस रहा है, मगर उसका कुछ बस नहीं चलता।

१२. दांतों उँगली काटना :— आश्चर्यचकित हो जाना; सरकसमें कई छोटे लड़कोंके खेल देख कर मैं दाँतो उँगली काटने लगा।

२३. पाँव निकलना :— मर्यादा लाँघना; मर्यादा तोड़ना; कुछ [illegible] उसके पाँव निकल आए हैं।

२४ पाँव भारी होना :— गर्भ रहना; सीताके पाँव भारी होनेकी खबर सुनकर उसके पिताको बहुत खुशी हुई।

२५ पाँवमें बेड़ी पड़ना :— शादी होना; अब शादी हो तुम्हारे पाँवमें भी बेड़ी पड़ जायगी।

पेट

२६ पेटका हलका :— जिसके बात न पचे; वह जिसके मनमें बात न रहे, अभी यह बात उससे मत कहना, वह पेटका हलका है।

२७ पेटकी आग बुझाना :— भूख मिटाना; पेटकी आग बुझानेके लिए सब कुछ करना पड़ता है।

२८ पेटकी बात :— छिपी बात, मैं आपसे पेटकी बात कह रहा हूँ, इसे किसीसे कहना मत।

२९ पेट गिरना :— गर्भपात होना, सासुको अपनी बहूके पेट गिरनेकी खबर सुनकर बड़ा दुःख हुआ।

३० पेट बाँध कर रहना :— भर पेट खाना न मिलना; देश इतना गरीब है कि बहुतसोंको पेट बाँध कर रहना पड़ता है।

३१ पेट बढ़ाना :— लालच करना, व्यापारीको अपना पेट बढ़ाना नहीं चाहिए; मुनाफा इतना हो जितना आटेमें नमक।

३२. पेटमें चूहे दौड़ना :— भूखसे बेचैन होना; आप जल्दीसे स्नान कर ले, मेरे पेटमें तो चूहे दौड़ रहे हैं।

३३. पेटमें डाढ़ी होना :— छुटपनमें ही अक़लमंदोंकी-सी बातें करना; यह बच्चा तो बड़ी समझकी बातें करता है, इसके पेटमें डाढ़ी है।

३४. पेटसे होना :— गर्भ रहना; वह आजकल पेटसे है।

६. जैसी करनी वैसी भरनी :— जैसा किया हो और परिणाम फिर वैसा ही आये मगर वह अच्छा न लगे, तब यह कहावत कहते हैं।

७. तुरत दान महा पुन :— जब आदमी भला करनेमें देर न करके फौरन उसे शुरू कर देता है, तब इस कहावतका प्रयोग होता है।

८. थोड़ा चना बाजे घना :— आदमीमें काम करनेकी सूझ-बूझ तो हो नहीं मगर बातें खूब करता हो, तो ऐसे आदमीके लिए यह कहावत कही जाती है।

९. नाच न जाने आँगन टेढ़ा :— यह कहावत ऐसे समय बोलते हैं जब कोई आदमी वास्तवमें काम तो न कर सकता हो, मगर न करनेके लिए बहाने बनाता हो।

१०. न नौ मन तेल हो न राधा नाचे :— काम करनेके लिए आदमी ऐसी शर्तें लगाये जो पूरी न हो सके, तब यह कहावत बोली जाती है।

नाटक खेलें

सपा० गिरिराजकिशोर, नरेन्द्र अजारिया

ये एकांकी नाटक पाठकोंको हिन्दी सीखनेमें बड़े मददगार ोंगे। सरलता इनका खास गुण है।

की० ०-६-० डाकखर्च ०-२-०

संवाद

गिरिराजकिशोर

इसका उद्देश्य भी पाठकोंके सामने बोलचालकी हिन्दी रखना । लेकिन यह पुस्तक विषय और वाक्यरचनाकी दृष्टिसे ातचीत-२' से आगे बढ़ी हुई है।

की० ०-६-० डाकखर्च ०-२-०

हिन्दी पाठावली — दूसरी किताब

सपा० गिरिराजकिशोर, नरेन्द्र अंजारिया

यह संग्रह हिन्दी तीसरी परीक्षाके लिए है। इसमें पाठों और शब्दोंके ...नोंमें भाषाकी सरलता और चलतेपनका खास खयाल रखा गया है।

की० १-४-० डाकखर्च ०-[illegible]

चुपकी दाद

सपा० गिरिराजकिशोर

यह मौलाना हालीकी दूसरी सुन्दर पुस्तक है। इसमें उन्होंने लोगोंको समझाया है कि स्त्रियोंका समाजमें क्या स्थान है, उनकी कितनी बड़ी जिम्मेदारियाँ हैं और इन्हें वे पूरा कर सकें इसके लिए उन्हें शिक्षा देना कितना जरूरी है।

की० ०-३-० डाकखर्च ०-२-०

आधुनिक हिन्दी कविता

सपा० मनुभाई पारोट, गिरिराजकिशोर

इस पुस्तकमें नागरी और उर्दू लिपिमें लिखी गई 'नई बोली' की आधुनिक कविताओंका संग्रह किया गया है। हिन्दी-उर्दूकी मिलीजुली आसान शैलीमें लिखनेवाले आधुनिक युगके लगभग सभी प्रतिनिधि कवियोंकी रचनाओंके नमूने इसमें आ गये हैं।

की० १-०-० डाकखर्च ०-४-०

प्राचीन हिन्दी कविता

सपा० गिरिराजकिशोर, अम्बाशंकर नागर

यह संग्रह राष्ट्रभाषाके अभ्यासके खयालसे तैयार किया गया है। कवियों और उनकी रचनाओंके चुनावमें यह बात ध्यानमें रखी गई है कि ऐसे कवियों और काव्योंको लिया जाय जो समाज पर अपना असर छोड़ गये हैं।

की० १-१०-० डाकखर्च ०-५-०

हिन्दी कहानी संग्रह — भाग ३

सपा० गिरिराजकिशोर, नरेन्द्र अंजारिया

यह संग्रह हिन्दी विनीत परीक्षाके लिए है। इसमें छः प्रसिद्ध कहानी-लेखकोंकी उत्तम रचनायें ली गयी हैं।

की० ०-१०-० डाकखर्च ०-४-०

गद्य-संग्रह

सपा० गिरिराजकिशोर, अम्बाशंकर नागर

यह संग्रह हिन्दी सेवक परीक्षाके लिए तैयार किया गया है।

की० २-८-० डाकखर्च ०-१३-०